वर्ष : 20 अंक : 8 अगस्त : 2023 मूल्य : 20/-

स्वास्थ्य और संस्कार

1 → मुझे शीघ्र जन्म-मरण से मुक्ति प्राप्त हो

2 → 14 रज्जू लोक के समग्र जीव सदा सुखी रहे

3 ← उत्कृष्ट 9 हजार करोड़ चरित्रात्माओं को संयम में भरपूर साता रहे

4 ← हे प्रभु! मुझे जीवन के अन्त समय में संथारा हो

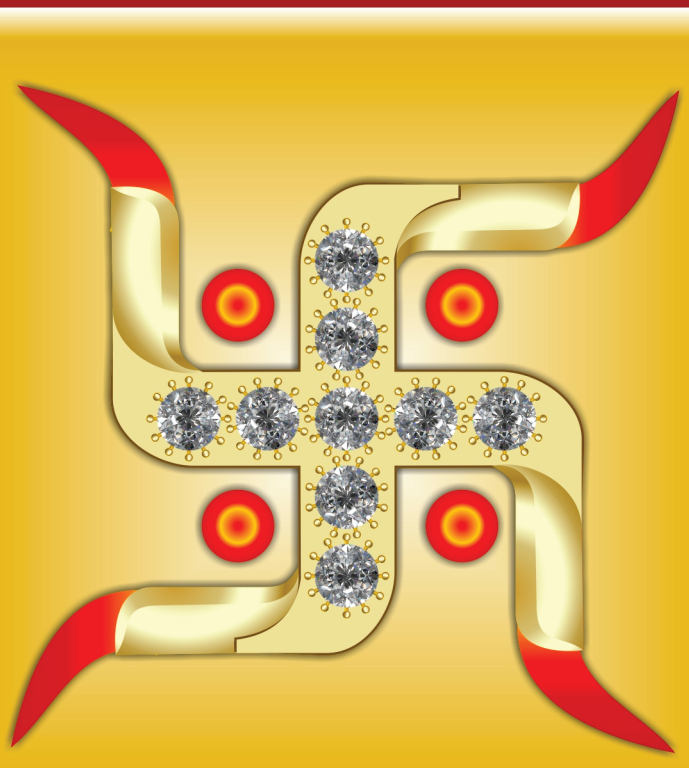

चार भावनाएं नित्य भाएँ

श्री महावीराय नमः

श्री सुदर्शन गुरुवे नमः श्री अरुण गुरुवे नमः

delhi is in style

by arunima fashions

• Designer Sarees • Lahenga Chunni
• Dresses • Suits • Gowns • Crop Tops
• Indo Westerns

Arunima Fashions

A Group Of Giri Lal Prem Chand Sarees Pvt. Ltd.

Gali Jutte Wali, 1st Floor, Nai Sarak, Chandni Chowk, Delhi - 110006

+91-11-43831651

+91-9818082520 || +91-9871631417

delhisinstyle delhiinstyles

PREM CHAND & COMPANY

RISHAB STAR LOGISTIC PVT. LTD.

Container Handling, Cargo Handling & Transportation Contractor

premjainandcompany@gmail.com

804, Best Sky Tower, Netaji Subhash Place, Delhi 110034

SCF 12, Rani Talab, Jind-126102 (Haryana)

मयंक जैन 9911177434

मुकेश जैन 9711862829

हर्षित जैन 9990995908

ARE YOU STILL INVESTING YOUR HARD EARNED MONEY IN FD?

The Truth is: Your Traditional FD is making you POOR

Discover the Proven Risk Management Framework that will give you 2X Return as compared to FD

with MR. DINESH JAIN

Dinesh Jain
INDEX INVESTING EXPERT

REGISTER NOW AT WWW.DINESH-JAIN.COM

पन्नालाल जैन
9468111167

पदम किशोर जैन
9896434000

पंकज जैन
8059413534

समकित जैन

अरुणम ज्वैलर्स

चांदी के जेवरात के थोक विक्रेता

शॉप नं. जी-9, बालाजी मार्केट,
सुनारों वाली गली,
नजदीक अप्रोच रोड, रोहतक (हरियाणा)

श्री सुदर्शन गुरवे नमः

श्री महावीराय नमः

श्री अरूण गुरवे नमः

VSTP LIGHTING

I.C. Goyal (Chairman)

Usha Goyal (Director)

Manufacturer of:

- *Octagonal Poles*
- *High Mast Poles*
- *Flag Mast Poles*
- *Decorative Poles*
- *Swaged Poles*
- *LED Street Lights*
- *LED Flood Lights*
- *Bollard Luminaires*
- *Post Top LED Luminaires*
- *Drop Down LED Luminaires*

IS 10322

R-91008540/75

ISO 14001:2015 ISO 9001:2015 ISO 45001:2018

VIPIN S.T. POLES PVT. LTD.

Poles & LIGHTING Solutions

KHARAR-HANSI ROAD, VILLAGE KUTUBPUR,
TEH. - HANSI, HISAR - 125044 (HARYANA)

Customer Support : +91 81999 49720, 90340 41720

E-mail: gechissar@gmail.com, info@vsphighmast.com | Website: www.vsphighmast.com

Warehouse : - Lucknow (UP) & Jaipur (Raj.)

Authorised Industrial Distributor

LUK INA FAG

SCHAEFFER GROUP

Specialised industries : Cement, Paper & Sugar,
Steel and Heavy industries, Textiles and Oil and Gas.

नीरज जैन

(9811116340)

NAMISHWAR ENTERPRISES

Head Office

2373/108, 1st Floor, Gopinath Building, Shradhanand Marg, G.B. Road, Delhi-110006
Ph.: +91-11-23217889, +91-11-23214243, Telefax+91-11-23217889
Mob.: +91-98111-16340, +91-93111-16340, e-mail : namishwar@yahoo.com

Sister Concern

DODOMA KILIMO

Manufacturer & Exporter of Sunflower Oil & Cake
Block-57, Area A, Dodoma, Tanzania

Deal In : All kinds of
Seamless Pipes, Cutting
Hydraulic Pipes
E.R.W. Pipes
round &
others Industrial Material

JAI BAJRANG ENTERPRISES

Ashok Jain : 9811233658, Manish Jain : 9811866240
Sandeep Jain : 9811517498, Ankit Jain : 9873705053
A-38, Aman Puri, Nagloi, Najafgarh Road, Delhi-41
e-mail : manish3976@gmail.com

Madan jain
9311542000

Abhishek jain
8470084500

DAYA Sons®
Water Magic Always...

J.M.D. INTERNATIONAL

Deals in:

Kitchen Sink Wash Basin P.V.C. Flushing Cistern
Toilet Seat Cover PTMT Taps & Bath Accessories

Kh. No. 28/8/1, & 28/7, Main
Siraspur Raod, Libaspur, Delhi-42
M.: 9311542000,
E-mail: jmd999.mj@gmail.com

!! श्री महावीराय नमः !!

!! गुरु मया-मदन-सुदर्शन संघ की जय !!

गुरुवर के हैं सारे गुण - जय सुदर्शन, जय अरुण

JAKSAR®

HEAVY BATH FITTINGS

Sanitary, Hardwares, Motors & Pumps

जिसे जो भी मिला वो मुकद्दर से मिला
मगर हमें तो मुकद्दर भी गुरु अरुण कृपा से मिला

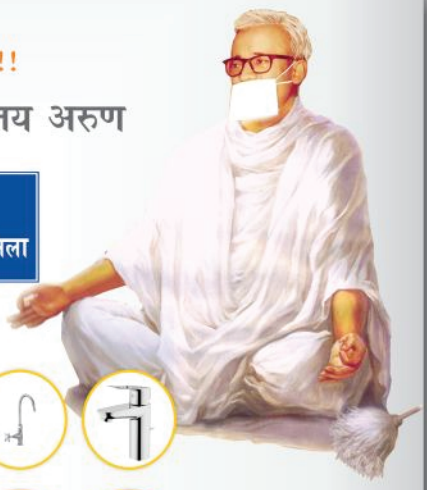

VINOD JAIN
9910269353

ANAND JAIN
9873282101

MANISH JAIN
9899296788

DELER or DISTRIBUTOR बनने के इच्छुक भाई सम्पर्क करें।

JAIN ENTERPRISES

G-113, SEC-2, DSIDC, INDUSTRIAL AREA, BAWANA, DELHI- 110039

Parveen Jain
8368046727

अहिंसा
परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Er. Shubham Jain
9773952739

Amit Jain
7982929788

Ajay Jain
9650411811

ROYAL PROPERTIES & BUILDERS

(JINDWALE)

- Industrial - Bawana | Kharkhoda & Agriculture Land

Residential :
Pitam Pura | Rohini

Associates with
Maa Banbhori Developers Pvt. Ltd.

ajayjain242@gmail.com

Plot No.-28, Pocket-E, Sector-4, Bawana Industrial Area, Delhi-110039

श्री महावीराय नमः

श्री सुदर्शन गुरवे नमः

श्री अरुण गुरवे नमः

Vinod Jain
Chairman and MD

परम पूज्य गुरुदेव
श्री अरुणचन्द्र जी म.
के श्री चरणों में कोटिशः वंदन नमन

Ashi Jain
Director

GOYUM GROUP
INDIA
SINCE 1971
• EXTRACTION • REFINING • RECYCLING
A Govt. of India Recognised Star Export House

We Specialize in Extracting Edible and Non-edible Oil From Various Types of Vegetable Oil Seeds & Nuts Such as :

Mustard / Rapeseed / Canola, Soyabean, Groundnuts, Sunflower, Cottonseed, Copra / Coconut, Neem, Sesame, Castor, Palm Kernel, Flaxseed, Jatropha, Shea Nuts, Cashew Nut Shell, etc.

Manufacturer & Exporter of:

Oil Mill Plant

Solvent Extraction Plant

Cooking Oil Refinery Plant

Fish, Poultry & Animal Feed Plant

MSW, Plastic & Industrial Shredder

Oil Mill Spare Parts

Why GOYUM?

- Exported to 63+ Countries
- 51+ Yrs. of Experience Cum Expertise
- 40000 Sqm State-of-the-Art Manufacturing Facilities
- Best Quality Product with Timely Delivery
- 750+ Turnkey Projects Worldwide
- Registered with UN Agencies
- Highly Qualified & Skilled Staff
- Excellent After Sales Support

GOYUM SCREW PRESS
Plot No. 2581, Industrial Area - A, Ludhiana - 141003 (Punjab) INDIA
+91 99157 43183 jain@oilmillmachinery.com | sales@oilmillmachinery.com
www.oilexpeller.com | www.goyumgroup.com goyum group

IRCC Lic. No. R706211 Pb. Govt. Lic. No. 1168

Can help you in achieving your dreams...

GGI GURU GLOBE IMMIGRATION

STUDENTS
HOUSEWIVES
WORKING PROFESSIONALS
Can Also Apply

CANADA / AUSTRALIA / NEW ZEALAND

IS CALLING YOU

Get your Work permit in 30 Days*

It's now or never.

- No Age bar
- Result Oriented
- No IELTS required
- 10th Pass can also apply
- Hassle Free Documentation
- Consultancy permissible by law
- 100 % as per Country's Govt. Norms

*T&C apply

SCO 38, 3rd Floor, Sector 32, Chandigarh Road, Ludhiana.
Ph. 0161-3501482, 483, 484, 485 | Email : info@guruglobeimmigration.com

CALL: 90560-55580
TOLL FREE NO. 1800 8900 580

रत्नत्रय प्रकाशन की अनुपम प्रस्तुति

स्वास्थ्य और संस्कार

शारीरिक मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य हेतु श्रेष्ठ मासिक पत्रिका

संरक्षक	प्रधान सम्पादक	प्रबन्धन
विनोद जैन 'लुधियाना'	निर्मल जैन 'गंगानगर'	दिनेश जैन 'गन्नौर'

अनुक्रमणिका

	सम्पादकीय	9
प्रकोष्ठ 1.	प्रवचन	
1.	अहिंसा की उपलब्धियाँ	10
2.	मस्त प्रवचन	13
3.	सावधान! लापरवाही घातक हो सकती है	14
4.	बुद्धि-वैभव और गुरुदेव सुदर्शन	17
5.	राखी का त्यौहार : एक पवित्र त्यौहार	19
6.	पढ़कर देखो, अच्छा लगेगा	20
प्रकोष्ठ 2.	इतिहास व आगम	
7.	शिवराम पार्क क्षेत्र का इतिहास	21
8.	जिज्ञासा और समाधान	22
9.	पाँचवाँ आरा (कर्मभूमि)	23
10.	झिंगुर/तिलचट्टा/कॉकरोच को जानें	25
11.	अल्प कर्मों का बँध कैसे होता है?	26
12.	भारतीय इतिहास के विस्मृत महानायक	27
प्रकोष्ठ 3.	आरोग्य की कुंजी	
13.	फाईबर रेशा	28

अनुक्रमणिका

प्रकोष्ठ 4.	परिचय	
14.	निष्ठा संपन्न श्रावक श्री अशोक जैन	29
15.	वानरत्न अर्हन जैन	29
प्रकोष्ठ 5.	प्रतियोगिता	
16.	बताओ ये साध्वी कौन हैं?	30
17.	Just For Kids	32
18.	उत्तर भेजिये इनाम पाइये	33
19.	पिछले अंक की उत्तर-पुस्तिका एवं निबंध लेखन	34
प्रकोष्ठ 6.	कुछ इधर-उधर से	
20.	एक गुमराह युवक की आश्चर्यजनक कहानी	35
21.	हाँ! बहुत मजेदार है...	38
22.	अभी भी इन्तजार आजादी का	39
23.	जिह्वा-लोलुपता और तप	40
24.	भजन	44
25.	Write what's the Right	45
26.	Help Me Please!	45
27.	पंचांग : जुलाई-अगस्त	46
प्रकोष्ठ 7.	सूचना एवं समाचार	47-52

प्रधान कार्यालय - स्वास्थ्य और संस्कार - प्रधान कार्यालय

एस. एस. जैन सभा, वेलफेयर ट्रस्ट

424, चौथी मंजिल, डी-मॉल-ट्विन डिस्ट्रिक सेन्टर,

सैक्टर-10, रोहिणी, दिल्ली-85 मो. : 8800779013

ANDROID APP ON Google Play

www.gurusewakparivaar.org info@gurusewakpariwaar.org https://www.facebook.com/gspparivaar

सम्पादकीय

विवेक होना चाहिए...

प्रिय श्रावकों! कुछ बातों में विवेक जरूरी है। जैन धर्म में विवेक का अत्यधिक महत्त्व है। विवेक के साथ क्रिया करते हुए हम कर्म-बंधन नहीं करते, अन्यथा विवेक के बिना संयम का पालन भी कर्म-बंधन का कारण हो सकता है, जो भविष्य में कटु फलदायक होता है।

कुछ बातें यहाँ तो ध्यान देना ही चाहिए-

(1) मुनिराजों को गोचरी बहराने में कुछ गृहस्थों की श्रद्धा किंवा आदत होती है। वो संतों के साथ नाजायज जिद्द करते हैं। विवेक से संतों की आवश्यकता अनुसार सहज और निर्दोष आहार बहराना चाहिए। निर्दोष गोचारी का विवेक आने वाले समय के लिए बड़ा प्रश्नचिन्ह है। अत: जागरूकता के संस्कार अभी से जरुरी हों।

(2) स्थानकों की छतों पर टंकी का पानी बहता रहता है, जो कि पानी की वेस्टेज के साथ-साथ असंख्यात अप्पकायिक जीवों की हिंसा का कारण है। कई जगहों पर अच्छा सिस्टम है, अलार्म मशीन लगा रखी है, जो समय पर जागृत कर देती है। अत: स्थानकों के सेवकों के भरोसे न रहकर जिम्मेदार सदस्य स्वयं ध्यान दें।

(3) पुस्तकालयों के रख-रखाव को लेकर ध्यान रखा जाए। क्या विडम्बना है? पुस्तकें बेकद्री का कारण बन रही है। कमाल तो यह है कि स्वाध्याय पिपासुओं का ध्यान भी इस ओर नहीं है। पुस्तकों को अलमारी में एक लिस्ट बनाकर व्यवस्थित रखना चाहिए तथा एक योग्य श्रावक लाइब्रेरी इंचार्ज नियुक्त करना चाहिए। उनकी अनुमति से ही अलमारी खुलनी चाहिए। लॉक लगाकर रखना परिस्थितियों ने जरूरी कर दिया है। कई स्थानकों में ऐसा सिस्टम है। फिलहाल तो उकलाना मण्डी का नाम ध्यान आ रहा है, अन्यथा बहुत जगहों की लाइब्रेरी तो धूल फाँक रही है। जरूरी पुस्तक ढूँढते-ढूँढते हाथ और समय दोनों ही कालें हो जाते हैं। क्या ऐसा होना चाहिए?

(4) मुनिराजों से धार्मिक उपकरण / सामग्री लेते समय विवेक बरतें। कितने-कितने नवकार मंत्र, कितने-कितने बैग होते हुए भी और माँगने की चाह है तो समझें... आप विवेकी नहीं, लोभी हैं। लोभियों की वजह से अच्छे भी बदनाम हो रहे हैं। दो-दो पापों के निमित्त आप मत बनिए।

(5) प्रवचन के कायदों में भी विवेक जरूरी होता जा रहा है। यदि आप देरी से आते हैं और आकर आगे घुसने का प्रयास करते हैं। यदि आपके बच्चे / मोबाइल अथवा कुर्सियों की खड़खड़ाहट प्रवचन में व्यवधान उपस्थित करती है। यदि आपको सभा में बोलने का मौका दिया गया है और आपने श्रोताओं की बस करवा दी तो समझो जनाब अभी आप विवेकी नहीं हो।

स्वास्थ्य और संस्कार परिवार आपके लिए सुभावना भाता है। विवेक आपके जीवन की शोभा बने।

1 अहिंसा की उपलब्धियाँ

(गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म.)

भगगवान पार्श्वनाथ तो अहिंसा के अवतार थे, तो किसी प्राणी का अहित कैसे चाह सकते थे। **'सव्वे पाणा पियाउआ अप्पिय वहा विय जीविणो, सववेसिं जीवियं पियं।'** सभी प्राणी अपनी जिंदगी से प्यार करते हैं तथा मृत्यु से बचते हैं। इसलिए उन्होंने हिंसा, पशुबलि, मानवबलि आदि कुप्रथाओं को बंद करवाया।

प्रभु महावीर ने नारी जाति पर होने वाले अत्याचार रुकवाए, शूद्रों के ऊपर अमानवीय हिंसा को भी भगवान ने बंद करवाया। माँसाहार और मद्यपान के राक्षसी खानपान से मानवता को बचाया। उनकी यही अहिंसा धारा युगों-युगों को प्रभावित करती हुई आज भी जन जीवन को निर्मलता-पावनता का संदेश दे रही है।

भगवान महावीर के शासन में हजारों साधु-साध्वियों ने अपने-अपने युग में अहिंसा का शंखनाद गुंजाया है।

आज जहाँ कहीं भी, जो कोई भी अहिंसा का प्रचार-प्रसार कर रहा है, वह भगवान महावीर के पैगाम को ही आगे बढ़ा रहा है। उस व्यक्ति के नाम के आगे-पीछे जैन विशेषण हो या नहीं, मैं उसे जैन ही मानता हूँ। भगवान महावीर का अनुयायी मानता हूँ और उसका सम्मान करता हूँ।

हमारे विद्वान शिष्य श्री राकेश मुनि जी में दया, अहिंसा के फैलाव की बड़ी तड़प है। उन्होंने ही मुझे एक दृष्टांत लिखकर दिया है। बड़ा मार्मिक दृष्टांत है। सरदार हरनाम सिंह जी बाहिए के इलाके के बड़े जमींदार थे। जैजो और ऊना की तरफ बाही नदी बहती है, इसलिए वो इलाका बाहिए का इलाका कहलाता है। इस जमींदार की नाभा-पटियाला आदि राजघरानों से रिश्तेदारी थी। शिकार, शराब, माँस और मुजरों का बेहद रसिया था। निशानची इतना पक्का था कि एक बार बंदूक के एक ही फायर से 70 तिलपर पक्षी मार गिराए थे। घर में ही मुर्गीखाना खोल रखा था। हालत ये थी कि अण्डों को आलू की तरह तथा चूजों को प्याज की तरह खा जाता था। धार्मिक दृष्टि से देखें तो सारा घर कत्लखाना लगता था। खून और माँस के लोथड़े भी रसोई में बिखरे रहते। कई जगह मारे गए पशुओं की लाश और खाल लटकी रहती। कभी-कभी माँस भूनने और कबाब तलने की दुर्गंध सारे घर में फैल जाती थी। शराबखाना भी घर में ही था। पीना भी और पिलाना भी, बस शौक में शुमार था।

उनके यहाँ एक और दरिंदाना रिवाज था कि यदि घर में लड़की का जन्म हो जाए तो पैदा होते ही मार देते थे। मान्यता ये थी कि लड़की की शादी के बाद दामाद बनाना पड़ेगा और उसके आगे झुकना पड़ेगा।

एक बार सरदार हरनाम सिंह जी शिकार करके, मारे गए पशुओं को लादकर ऊंट पर आ रहे थे। रास्ते में देव समाज के एक प्रचारक साधु देवत्व सिंह जी मिल गए।

देव समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, ब्रह्म समाज- ये सुधारवादी आंदोलनों की उपज रही है। आर्य

समाज का जन्म गुजरात में हुआ, पर प्रचार-प्रसार अधिकतर उत्तर भारत में हुआ। प्रार्थना समाज अधिकतर पश्चिमी भारत- बम्बई, गुजरात में फला-फूला, ब्रह्म समाज पूर्वी भारत- बंगाल के इलाके में पनपा। जबकि देव समाज का प्रभाव क्षेत्र पंजाब के छोटे से हिस्से में रहा। भठिण्डा, उवावली, मोगा, अंबाला आदि शहरों में अब भी देव समाज की संस्थाएँ काम कर रही हैं।

खैर, जब साधु श्री देवत्व सिंह जी ने सरदार जी का ऐसा घिनौना रूप देखा तो उनकी आत्मा कराह उठी और सरदार जी को कहने लगे- 'यदि किसी को राज गद्दी मिल जाए और वह अपनी ड्यूटी छोड़कर झाड़ू से पाखानों की सफाई करता फिरे तो उसे आप क्या कहेंगे?'

सरदार हरनाम सिंह बोले- 'उसे महामूर्ख और मंदभागी कहा जाएगा।'

साधु जी ने सीधे तौर पर प्रहार करते हुए कहा- 'आपको भी बाहिए की सरदारी मिली थी, पर कसाई का काम कर रहे हो। बस, तुमने झाड़ू नहीं, बंदूक पकड़ी है। भंगी की झाड़ू से तो फिर भी सफाई होती है, मगर बंदूक से निर्दोष पशु-पक्षियों का सफाया होता है। राजगद्दी के मालिक होकर भी आप भंगी से भी घटिया हालत में जा पहुँचे हैं।'

साधु देवत्व सिंह जी के ये शब्द सरदार जी के दिल पर गोली की तरह जा लगे। तुरंत तीन चीजों का नियम ले लिया। शराब, माँस और शिकार। शराब की बोतलें पक्की दीवारों से मार-मार कर फोड़ दीं। शराब के मटके विदा कर दिए। शराबखाने को बदलकर 'साधन स्थान' अर्थात् सत्संग भवन बना दिया। शराबी दोस्तों और महाराजाओं की महफिलें छोड़ दीं। रिश्वत और अन्याय से कमाया हुआ पैसा वापस कर दिया।

वे प्राणी मात्र के प्रति इतने दयावान हो गए कि जंगलों में जाकर पशु-पक्षियों को दाना डालते, उन्हें पानी पिलाते। जीवन का सारा स्वरूप ही बदल गया। भक्ति, प्रार्थना, प्रभु कीर्तन, आत्म संशोधन में पल-पल बीतने लगा। ऐसे धर्म भाव से भरपूर मानव की भावना क्या हो सकती है। कविता के स्वरों में सुनिए:-

उस पार चलो तुम प्राण जहाँ
विश्वास सत्य में हो ढलता।
उस पार चलो मेरे अंतर जीवन
न जहाँ कोई छलता।
हो वर्ण विभेद रहित जीवन
पलकों में करुणा पलती हो।
हो मरण जहाँ जीवनदायी,
स्वार्थों की दुनिया जलती हो।
उस पार चलो सम्मान मेरे
निष्काम जहाँ जीवन बनता।।1।।
मरघट भयमुक्त चकोर जहाँ
प्रियतम के लिए मचलता हो।
कलियों के सचित्त सौरभ को
ललचाया भ्रमर न हरता हो।
समता, ममता और क्षमता में
जीवन अविराम जहाँ पलता।।2।।
युग के प्रतिवेध जहाँ न उगे
मन फंसे न रूढ़ी विवादों में।
अंतस का अमृत धर न सके
छल बल धन कपट विषादों में।
हो धर्म कर्म श्रद्धा निष्ठा
सुविचार जहाँ पर हो फलता।।3।।

लिहाजा, सरदार जी अपने अभियान में आगे से आगे बढ़ते रहे। लड़कियों के लिए कई जगह स्कूल खुलवाए। एक बार उन्हें याद आया कि मैंने एक बार सरदारी के नशे में नौकर को पीटा था। गाँव में जाकर उससे माफी माँगी। नौकर के हाथ में लाठी दी और कहा- जितनी मैंने मारी थी, उससे भी ज्यादा मुझे मार।

जीवन के अंतिम पड़ाव पर घर बार छोड़कर विरक्त होकर शांतिपूर्वक प्राण छोड़े थे। ये है अहिंसा का जादू।

अहिंसा के बिना सृष्टि का संचालन संभव नहीं हैं, जिन पशुओं की खुराक माँस है, वे भी हर प्राणी को मारकर नहीं खाते। अपने बाल-बच्चों की, अपनी प्रजाति के प्राणियों की रक्षा वो भी करते हैं। पशु जगत् तो अपनी अज्ञानता के कारण अपनी शारीरिक प्रकृति को बदल नहीं सकता। जिंदगी भर एक ही ढर्रे में जीता है। जबकि मानव मननशील है, वह अपनी प्रकृति को बदल सकता है।

लेकिन मानव भोजन के मामले में अपनी शारीरिक प्रकृति को छोड़कर उलटे विकृति की ओर बढ़ा है। प्रकृति के नियमों के मुताबिक वह शाकाहारी है। उसके दाँत, जबड़े, नाखून, लार, अंतड़ियों का सारा सिस्टम शाकाहार के अनुकूल है और माँसाहार के प्रतिकूल है। फिर भी विश्व की अधिकतर आबादी माँसाहारी रही है। इसके पीछे कुछ भौगोलिक ऐतिहासिक कारण भी रहे हैं। पहाड़ी, रेगिस्तानी तथा समुद्री इलाकों में गेहूँ, चावल आदि धान्यों की उपज नहीं होने से वहाँ के निवासी मजबूरी में जीवन निर्वाह के लिए माँसाहारी बन गए। फिर सैकड़ों हजारों वर्षो की परंपरा बनने से माँसाहार वहाँ की संस्कृति और धर्म का अंग बन गया। बाद के युग में यदि उन इलाकों में अन्न का उत्पादन होने भी लगा था, वे लोग उन जगहों को छोड़कर मैदानी इलाकों में आकर बस गए तो भी उन्होंने अपने खाने की आदतें नहीं बदली। ठीक है, उन्होंने शाकाहारी भोजन तो अपना लिया, मगर माँसाहार नहीं छोड़ा, जिससे उनका मानसिक विकास तो रुका ही रुका, साथ ही साथ उनके शरीरों में नाना प्रकार के रोग और लग गए। सबसे बड़ा नुकसान तो ये हुआ कि मानव मन में जो संवेदनशीलता, कोमलता, परदु:ख कातरता थी, माँसाहार ने उसे लील लिया।

जिन घरों में छोटे-छोटे बच्चों को पशु-पक्षी काटने की ट्रेनिंग दी जाती हो, उन घरों से दया, करुणा अलविदा हो जाती है। ऐसे बालक प्राय: बड़े होकर खूंखार और क्रूर बन जाते हैं।

आज तो शायद मुसलमान समझते हैं कि कुर्बानी करना हमारे लिए धार्मिक आवश्यकता है, मगर उनके इतिहास को टटोलें तो उनके यहाँ भी पशु रक्षा का प्रावधान रहा है।

एक बार पैगम्बर मोहम्मद जंगल में से गुजर रहे थे। तभी उन्होंने देखा कि एक शिकारी एक हिरणी को पकड़ कर ले जा रहा है। वह हिरणी मुड़-मुड़ कर पीछे की ओर देख रही थी। उसकी आँखों से आँसू आ रहे थे। उससे चला नहीं जा रहा था। उस हिरणी के रेशे-रेशे से दया की माँग टपक रही थी। बड़ी करुणामय स्थिति थी। मोहम्मद साहब समझ गए कि यह हिरणी क्यों इतना तड़प रही है। उसे अपने प्राणों की फिक्र नहीं थी, बल्कि अपने नवजात शिशुओं के जीवन की चिंता थी। वे छोटे-छोटे बच्चे माँ का दूध पिए बिना तड़प जाएँगे, यही चिंता हिरणी को खाए जा रही थी। पशु जाति में अपनी

औलाद के लिए जो ममता होती है, उसका वर्णन संस्कृत के एक श्लोक में भी इसी तरह से किया है कि एक हिरणी अपने कातिल से कहती है कि तू मेरे शरीर के किसी भी हिस्से से माँस काट ले, मगर मेरे स्तनों को मत काटना, क्योंकि मेरे बच्चे अभी घास नहीं खाने लगे हैं। उन्हें दूध तो इन्हीं स्तनों से पीना होगा।

आदाय मांस मखिलं स्तन वर्जिताङ्गाद,
मा मुंच वागुरिक यामि कुरु प्रसादम्।
अद्यापि शव्य कवल ग्रहणा न भिज्ञाः,
मन्मार्ग वीक्षण पराः शिशवो मदीयाः॥

लगभग ऐसी ही मनोव्यथा उस हिरणी को देखकर पैगंबर मोहम्मद साहब का दिल भर आया।

वो आँख आँख नहीं,
वो दिल दिल नहीं,
जिसे किसी मुसीबत जदा की
मुसीबत नजर नहीं आती।
अगर तेरे दिल में दया ही नहीं,
समझ ले तुझे दिल मिला ही नहीं।

तो लिहाजा, पैगम्बर मोहम्मद उस शिकारी के पास जाकर कहने लगे- मेहरबान, तू इस हिरणी को कुछ देर के लिए छोड़ दे। ये अपने बच्चों को दूध पिला कर वापस आ जाएगी। शिकारी को ये बात नहीं जंची। जँचने लायक लगती भी नहीं। दोनों की बात को शायरी में लिखा है-

फरमाया रिहा कर है बड़ा रहम का पाया।
इंसान वह नहीं जिसने हैवां को सताया॥ क्रमशः ...

सत्य अहिंसा धर्म है, जीवदया का द्वार
नहीं सताएं जीव को, बनें सदा आधार

2 मस्त प्रवचन

"पिक्चर की दो टिकट मेरे पते पर भेज दोगे?"
"मुफ्त में"
"हाँ"
"इस प्रकार मैं कैसे भेज सकता हूँ?"
"तुम थिएटर में नौकरी करते हो, तो इतना नहीं कर सकते?"
"पहले तुम मेरा एक काम कर दो?"
"क्या"
"एक हजार रुपये के 2 नोट मेरे पते पर भेज दो।"
"मैं किस प्रकार भेज सकता हूँ?"
"तुम बैंक में नौकरी करते हो, तो इतना नहीं कर सकते?"

पाप....

सामान्यतः जीवन में पाप तीन मार्गों से प्रवेश करता है- 1. लाचारी के मार्ग से, 2. लालच के मार्ग से, और 3. लोभ के मार्ग से।

इन तीनों में सबसे अधिक घातक मार्ग यदि कोई है, तो वह लोभ का मार्ग है।

लाचारी के कारण होने वाले पाप तो स्थिति बदलने पर समाप्त हो जाते हैं।

लालच के कारण होने वाले पाप प्रलोभन की अनुपस्थिति में तिरोहित हो जाते हैं।

परन्तु लोभ चौबीसों घंटे जीता-जागता रहता है। इसके कारण पाप जीवन से हटने का नाम ही नहीं लेते।

स्मरण रखना,

हिंसा से दूर रहना सरल है, परन्तु
लोभ को दूर रखना अत्यंत कठिन है।

3 सावधान! लापरवाही घातक हो सकती है।

(आगमज्ञाता गुरुदेव श्री अरुणचन्द्र जी म.)

[यह प्रवचन गुरु म. द्वारा 5 जुलाई, 2023 को उत्तरी पीतमपुरा में फरमाया गया था। विषय चल रहा है- 7 बुरी आदतों को छोड़ने के 7 पैटर्न, जो सुख के ताले को खेल सकते हैं। उन्हीं में से लापरवाह होने की बुरी आदत, जिसका पैटर्न दिया गया- सजगता। पढ़िये आप भी। -संपादक]

साहू गोयम..... महोदहीं।।
छोटा मुख है..... वंदन बारंबार।।
भजन.....
जब से मिली शरण कि मेरे पाप धुल गए।
ऐसे छूए चरण-3 कि मेरे भाग खुल गए।।टेक।।
उसने कहा मुझे बारम्बार, गुरुजी करते जग उद्धार।
बार-बार जो ध्यान धरे, उसका लगा दे बेड़ा पार।।
ऐसा रही लगन-3 कि मेरे भाग खुल गए....।

अनंत उपकारी गुरु म. के पावन चरणों में रहकर हम जो कुछ भी ग्रहण कर सके हैं, कुछ देर आपके समक्ष रखेंगे। भव्य जीव रत्नत्रय का आराधन करें। हमारी कोटिश: मंगलकामनाएँ हैं..... तीर्थंकर भगवंतों की पावन वाणी जा-जा वच्चई रयणी, सकला जंति राइयो....

अरिहंतों की वाणी साधारण होती है, अगर हम सरलता-सजगता-सरसता से सहर्ष एवं समझपूर्वक सुनेंगे तो यही वाणी हमारी जीवन में असाधारण परिवर्तन लाने वाली बन सकती है। तब आप कह पाओगे कि मैंने संपूर्ण विकास कर लिया है।

यह मनुष्य जन्म बहुत बड़ा उपहार है, कुदरत की तरफ से मिला हुआ कीमती तोहफा है। आनंदित जीवन का स्वामी बनने के लिए आपको यह वाणी तो सुननी ही चाहिए। महावीर कहते हैं- गौतम! जो-जो रात्रि लौट रही है, उनको सफल कर लो, वो पुन: लौट कर नहीं आने वाली। सार्थक कर लो, संस्कारित कर लो, संयमित कर लो...।

ध्यान दो इन पंक्तियों की ओर, क्या आपने सफल कर ली? क्या आपने सार्थक कर ली? क्या आपने संस्कारित कर ली? हम क्यों भूल जाते हैं कि यह समय लौट कर नहीं आने वाला। बस इसी समय को सार्थक करने के लिए आपके सामने विषय चल रहा है। सात प्रकार की बुरी आदतों को 7 प्रकार के पैटर्न से सुधारो। आपने सुना फायर पैटर्न, कायर पैटर्न, लायर पैटर्न और आज चर्चा करेंगे लापरवाही की बुरी आदत के सजगता के पैटर्न की.....

लापरवाही सबसे बड़ी नालायकी है, नासमझी है। संसार में लापरवाही एक है, पर इसके नुकसान अनेक हैं। मैं बात शरीर की करता हूँ। आप ध्यान से सुनना। इधर-उधर देखने में समय मत बर्बाद करें। यदि आपके नेत्र स्थिर नहीं है तो आप सामायिक में दोष लगवा बैठोगे। नेत्रों को स्थिर करना बहुत बड़ी साधना है।

बंधुओं! शरीर के प्रति लापरवाही मत करो। आज व्यक्ति समय से पहले बूढ़ा हो जाता है। यदि आप भी शरीर के प्रति लापरवाही करते रहे तो जिंदगी अभिशाप बन जाएगी। आज लापरवाही के कारण ही बहुतों की जिंदगी अभिशाप बन गई है। वो अभिशाप मोटापे के रूप में सामने आ रहा है। वो अभिशाप इस रूप में सामने आ रहा है कि दो कदम चलने पर साँस

फूलने लगता है। बगैर कुर्सी के नीचे बैठ नहीं सकते। यह अभिशाप नहीं तो क्या है? लोगों के घरों में राशन की तरह दवाइयाँ आ रही हैं।

आप लापरवाही छोड़ो और योग-प्राणायाम -आसन की ओर ध्यान दें। पर लोग आलसी है। सोचते हैं- जन्मदिन से मैं पार्क जाने की शुरुआत करूँगा, पर वो जन्मदिन कभी आता ही नहीं है। बात कल पर ना छोड़ो, जो दिन आया है उसका स्वागत करो। उसे सार्थक करो। कल कभी नहीं आता। जब भी आता है वर्तमान ही आता है।

एक माँ-बेटा दर्शनार्थ आए और बात चली तो माँ कहने लगी- मेरे बेटे में एक से बढ़कर एक गुण हैं। उसने बोलना शुरू किया तो बोलती ही रही। मैंने भी बेटे की मोटी सेहत को देखकर पूछ लिया- श्राविका! तेरा बेटा कहीं लापरवाह तो नहीं? बस इस प्रश्न ने उनको चुप्पी सधवा दी।

बंधुओ! बात हँसने की नहीं, सोचने की है। कहीं आप भी ऐसे तो नहीं? कहीं आपका बेटा भी ऐसा तो नहीं। सजगता बहुत बड़ा गुण है। यदि आप अपनी पर्सनेलिटी डेवलप करना चाहते हो तो हमेशा सजग रहो। कौन-सा कार्य कब करना है? हमेशा सजग रहो। अंग्रेजी भाषा का एक शब्द है- Careless. कहीं आपके साथ यह विशेषण ना लग जाए। अनंत जन्मों से लगता ही आया है बंधुओं यह मौका है Careless की कैटलॉग में से अपना नाम हटाने का।

याद रखना भगवंतों की बात को, प्रवचन केवल सुनने के लिए नहीं होता। प्रवचन होता है चुनने के लिए, बदलने के लिए। प्रवचन के बाद कभी सोचना- मैं कहाँ-कहाँ लापरवाही करता हूँ। धर्म का मतलब भी तो प्रतिपल सजग होकर जीना है।

दिल्ली का ही एक लड़का, जिसे 40 साल की उम्र में अधरंग हो गया। कारण? मात्र इतना कि दवाई टाइम पर नहीं लेता था। इसी लापरवाही का फायदा उठाकर बी.पी. शूट कर गया। बंधुओं! जीवन में थोड़ी सी समझ पैदा करो।

गुरु समझ देते हैं और कौन सी समझ? पुरुषार्थ का दामन थाम लो। आलस-लापरवाही छोड़ दो। व्यक्ति के पुरुषार्थ से ही उसके भाग्य का निर्माण होता है....।

मैं प्रमुखाचार्य श्री अमर सिंह जी म. की एक घटना सुनाता हूँ। अरे बोलो रे भाइयों! वो आचार्य जी, जिनके 12 शिष्य थे। वो दुविधा में थे- मैं किसे उत्तराधिकारी के रूप में नियुक्त करूँ।

आचार्य प्रवर ने अपने सूझे हुए उपायानुसार रास्ते के बीचोबीच एक पात्री रख दी। सारे शिष्य; कोई ठोकर मार कर तो कोई अनदेखा कर आगे चलते रहा, पर एक स्थित प्रज्ञ शिष्य ने पात्री को उठाकर ठिकाने लगा दिया। आचार्य जी ने उनको उत्तराधिकारी बना दिया।

अरे बोलो रे भाइयों! वो थे श्री रामबख्श जी म. जिनका देवलोक मालेरकोटला में हुआ था।

इसे कहते हैं सजगता-सावधानी-चौकन्नापन और नॉर्मल लैंग्वेज में कहूँ तो पैनी निगाह। आप भी ऐसी सजगता के प्रति हमेशा सावधान रहें। अपनी रिस्पोंसबिलिटी को समझें। भारत की सेना हमेशा सजग रहती है। ना जाने पाकिस्तान कब हमला कर दे।

आप भी सजगता बरतो। यदि आप रिश्तों के प्रति लापरवाह हैं तो संभलो। यदि आप समाज के प्रति, परिवार के प्रति लापरवाह है तो बंधुओं संभलने की जरूरत है।

लिहाजा! ये जो लापरवाही है वो कभी-कभी तबाही का कारण बनती है। और तो छोड़ो, लोग स्थानकों के प्रति भी लापरवाह बनते जा रहे हैं। हम एक घर में गए। एक नौजवान साथी को मैंने स्थानक आने के लिए कहा। जयप्रकाश जी, सुभाष जी आप भी तो साथ में थे। पर मुझे क्या पता ये नौजवान भी लापरवाही में जी रहा है। आपको स्थानक में आमंत्रित करना मेरा अधिकार है। नौजवान के इरादों से मैंने जान लिया कि यहाँ दाल गलने वाली नहीं है।

एक बार एक सनातनी गुरु और चेला थे। आज के समय में चेले कम झमेले ज्यादा हैं। पुत्र कम पतंदर ज्यादा हैं। अब गुरु चेले को कहने लगे कि बाहर देखकर बताओ बारिश आ रही है या नहीं। चेला ठहरा आलसी। कहने लगा- गुरु जी! अभी-अभी बाहर से बिल्ली आई है। यदि गीली है तो समझ लो बारिश हो रही है और यदि सूखी है तो बारिश नहीं हो रही है.....। (हँसी)

गुरु फिर कहने लगे- चल भाई! एक काम और कर दे। खड़ा होकर लाइट बंद कर दे।

चेला बोला- गुरु जी! एक काम करो आँखें बंद कर लो। लाइट बंद हुई बराबर हो जाएगी। (हँसी)

गुरु भी उसको आसन से उठने के लिए कमर कसे हुए थे। फिर कहने लगे- अच्छा भाई, अब खड़ा होकर दरवाजा तो बन्द कर दो।

चेला भी कहाँ कम था! तपाक से बोला- गुरु जी दो काम मैंने कर दिये। अब एक तो आप भी कर दो। (जोरदार हँसी)

बंधुओं! बात हँसने की नहीं, विचार करने की है। आप भी विचार करो। कहाँ-कहाँ आलस करते हो? किस-किस की आज्ञा के प्रति लापरवाह होता हूँ?

आप मेरे कुछ सुझाव नोट कर लो तो आपकी लापरवाही सजगता में बदल सकती है।

(i) हर कार्य सजगता के साथ करो।

(ii) कोई कार्य अधूरा ना छोड़े।

भजन

अपना कर्त्तव्य करते रहो
चिंता करने से कैसे चलेगा।
चाहे आँधी या तूफान हो.....
चिंता करने से कैसे चलेगा।

(iii) हर कार्य जिम्मेदारी लेकर करो।

(iv) कौन सा कार्य कब करना; इसके लिए समय निर्धारित करो।

(v) कल की बात आज पर तथा अब की बात आज पर मत छोड़ो।

होता है, होता है

आनंद प्रभु की वाणी से....

"If you love a flower, don't pick it up.
Because if you pick it up it dies and it ceases to be what you love.
So if you love a flower, let it be.
Love is not about possession. Love is about appreciation."

4 बुद्धि-वैभव और गुरुदेव सुदर्शन

(आगमज्ञाता गुरुदेव श्री अरुणचन्द्र जी म.)

बुद्धि एक मानसिक शक्ति है, जो वस्तुओं और तथ्यों को समझने, उनसे परस्पर संबंध खोजने एवं तर्कपूर्ण ज्ञान प्राप्त करने में सहायक है। बुद्धि ही मनुष्य को नवीन परिस्थितियों को ठीक से समझाने और उनके अनुसार स्वयं को अनुकूल बनाने में सहायक है। इस व्यवहार पक्ष के साथ-साथ बुद्धि का आध्यात्मिक पक्ष भी है। जो साधक के आत्मिक गुणों और क्षमताओं को ज्ञान, करुणा, प्रेम व रचनात्मक कार्यों में सक्रिय करता है। ऐसे आध्यात्मिक बुद्धिसाधक स्व पर कार्य को साधते हुए नि:श्रेयस के पथ पर अग्रसर होते हैं।

गुरुदेव ऐसी ही आध्यात्मिक एवं विवेक परक बुद्धि के स्वामी थे। वे एक प्रज्ञाशील महापुरुष थे। उनमें मात्र बौद्धिक पांडित्य ही नहीं, अपितु उनका अंतस् आध्यात्मिक आलोक की दिव्य दृष्टि से दैदीप्यमान था। पूज्य गुरुदेव वैनयिकी एवं औपपातिक बुद्धि के स्वामी थे। उन्होंने अपनी बुद्धि का उपयोग किसी को नीचे दिखाने में नहीं, अपितु कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ने में किया। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के बल पर बड़े-से-बड़े उलझे प्रश्नों का समाधान वे कुछ ही क्षणों में कर देते थे।

आप इसी बात से अनुमान लगा सकते हैं कि जब वे 1940 में वैराग्य अवस्था में गुरुदेव के चरणों में आए तो उन्होंने चंद दिनों में ही प्रतिक्रमण, नवतत्व, छब्बीस द्वार, दशवैकालिक सूत्र व अन्य आगमिक सामग्री कंठस्थ कर ली थी। वाचस्पति गुरुदेव अपने शिष्य के बुद्धि वैभव को देखकर गद्‌गद् हो गए।

श्रमण प्रतिक्रमण तो गुरुदेव ने मात्र डेढ़ दिन में ही कंठस्थ कर सबको चमत्कृत कर दिया। यह हमारा ही अहोभाग्य है कि हमें भी ऐसे महान विद्वान और विवेकी गुरुदेव का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

गुरुदेव को इस तरह की प्रखर प्रतिभा व स्मरण शक्ति का वैभव विरासत से ही प्राप्त हुआ था। पितृ परम्परा एवं गुरु परम्परा, दोनों का ही बौद्धिक क्षमता का भण्डार गुरुदेव को आशीर्वाद स्वरूप प्राप्त हुआ था। गुरुदेव के सांसारिक पिता बाबू चंदगीराम जी एक घंटे में आगम की 60 गाथाएँ स्मरण कर लेते थे। वाचस्पति गुरुदेव 80 गाथाएँ, उसी क्रम में गुरुदेव ने भी एक घंटे में 40 गाथाएँ

स्मरण कर अपनी योग्यता का परिचय दिया।

सन् 1944 में गुरुदेव को बिहार के सुप्रसिद्ध प्राध्यापक श्री शुकदेव जी अध्ययन करवाने हेतु पधारे। जो अध्ययन सामान्यत: चार वर्षों में पूर्ण होना था, गुरुदेव ने अपनी कुशाग्र बुद्धि से उसे एक वर्ष में ही पूर्ण कर लिया। दीक्षा के मात्र तीन वर्ष के स्वल्पकाल में तो गुरुदेव संस्कृत व्याकरण, अमरकोष, भट्टिकाव्य, तर्कसंग्रह, न्याय-मुक्तावली, श्री दशवैकालिक, नंदी सूत्र, आचारांग, सुखविपाक आदि आगमों के धुरंधर विद्वान बन गए। इनमें से अधिकतर आगम गुरुदेव को कंठस्थ थे। यह सब गुरुदेव के बुद्धि वैभव का ही परिणाम था। गुरुदेव की स्मरण शक्ति एवं परिश्रमशीलता तो स्वयं में एक महान कीर्तिमान थी।

गुरुदेव का सन् 1959 का चातुर्मास बड़ौत शहर में हुआ। उस समय गुरुदेव के लिए उत्तर प्रदेश एक नया क्षेत्र था। सभी अपरिचित थे। परन्तु गुरुदेव की स्मरण शक्ति विलक्षण थी। प्रवचन में जो भी श्रावक आते गुरुदेव उनका नाम पूछते। अगले दिन उन्हीं श्रावकों को उनके नाम से बिना किसी त्रुटि के सम्बोधित करते। उनकी प्रतिभा को देखकर श्रावक वर्ग भी उनकी ओर आकर्षित होने लगा। संत परम्परा में भी ऐसी प्रतिभा का दिग्दर्शन कहीं अन्यत्र देखने को मिलना सुलभ नहीं है। मैंने स्वयं अपनी आँखों से यह चमत्कार अनेक बार देखा है। ऐसी प्रज्ञा गुरुदेव जैसे महान व्यक्तित्व को ही प्राप्त होती है।

गुरुदेव के जीवन की एक और घटना है, जो उनकी स्मरण शक्ति की तीक्ष्णता का परिचय देती है। सन् 1972 में गुरुदेव चंडीगढ़ पधारे। उस समय समाज के एक सुप्रसिद्ध वकील अपने साथ किसी महानुभाव को लेकर गुरुदेव के दर्शनार्थ जैन-स्थानक में पधारे। वंदन करने के पश्चात् उस आगंतुक ने कहा, 'गुरुदेव! क्या आपने मुझे पहचाना?'

पूज्य गुरुदेव ने उसी क्षण अपने बौद्धिक संगणक (कम्प्यूटर) का बटन दबाया। बोले- 'अच्छा! नटखट प्रेमचंद!'

आगंतुक व्यक्ति हर्ष-विभोर होकर गुरु चरणों में नतमस्तक हो गया। वह महानुभाव हरियाणा हाईकोर्ट के जस्टिस प्रेमचंद जैन थे, जो कि रोहतक के सुप्रसिद्ध वकील श्री लालचंद जी के सुपुत्र थे। वे गुरुदेव के चरणों में लगभग 35 वर्ष पश्चात् उपस्थित हुए थे। परन्तु गुरुदेव के मस्तिष्क में पुरानी स्मृतियाँ आज भी अंकित थीं।

गुरुदेव तीव्र मेधा के धनी थे। कुछ विषयों पर गुरुदेव का असाधारण अधिकार था। गणित, इतिहास, भूगोल, अंग्रेजी आदि उनके स्कूल से ही प्रिय विषय थे। अर्थशास्त्र में तो उनकी अद्भुत पकड़ थी। जब वे दसवीं कक्षा में अध्ययरत थे। उसी समय उन्होंने Economics Made Easy नामक पुस्तक का लेखन कर दिया था, जो मास्टर शामलाल जी के नाम से प्रकाशित हुई व बाजार में इसकी बहुत बिक्री भी हुई।

पूज्य गुरुदेव बाल्यावस्था से ही कुशाग्र बुद्धि के धनी थे। अध्ययन में इतने कुशल थे कि प्रत्येक कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

पूज्य गुरुदेव का गुणगान करते हुए भगवानश्री ने एक स्थान पर लिखा था कि गुरुदेव का बुद्धिबल लाला हरदयाल के समान एवं लगन आचार्य वृद्धवादी के समकक्ष थी।

5 राखी का त्यौहार : एक पवित्र त्यौहार

(आगमज्ञाता गुरुदेव का प्रासांगिक संदेश)

रक्षा बंधन; आगमिक दृष्टि से बंधन कष्टप्रद माना गया है, पर इसके साथ रक्षा जुड़ने से यह पवित्रता की पराकाष्ठा पर स्थित हो गया है।

वैसे रक्षा तो कोई भी किसी की भी कर सकता है। यथा- पति-पत्नी की, गुरु-शिष्य की, देवर-भाभी की और बलवान-निर्बल की। पर मुख्यत: यह पर्व भाई-बहन की रक्षा के रूप में प्रचलित है।

उन दिनों में कन्याओं को बहुत खतरा होता था। अपहरण और ज्यादती तक होती थी। ऐसे में उन कन्याओं की सुरक्षा हेतु भाई आगे आए। आज भी भाई-बहन से रक्षा बंधन बँधवाकर उनकी रक्षा का प्रण करते हैं।

ध्यान रहे : यह पवित्र पर्व पैसों की भेंट ना चढ़े। आज भाई के प्यार को कहीं-कहीं पैसे से तोला जाने लगा है, जो कि गलत है। भाई-बहन का प्यार पवित्र होता है। भाई-बहन का प्यार तो ऐसा होता है कि वो जरूरत पड़ने पर एक दूसरे को किडनी तो दे सकते हैं, पर टीवी का रिमोट नहीं।

बहन यह माँगे...

यदि भाई के जीवन में कोई दुर्गुण, दोष अथवा व्यसन हो तो बहन नम्र भाव से झोली फैलाकर मात्र उस व्यसन को छोड़ने की माँग करे। बहनें शूर्पणखा बनने की नापाक हरकतें ना करे, तो ही वो राखी बाँधने की अधिकारी है।

और! भाई यह प्रण करें...

मैं अपनी बहन के तुल्य ही हर बहन का सम्मान करूँगा। अपनी गिनती कभी रावण और दु:शासन जैसे लोगों में नहीं करवाऊँगा। **बहन ये प्रण ले**- अपनी वाणी और व्यवहार से कभी पितृपक्ष पर उँगली नहीं उठवाऊँगी।

यदि आप संतों को राखी बाँधो तो...

इनमें से एक राखी बाँधें-

डायमंड की राखी : एक अठाई तप करें।

गोल्ड की राखी : वर्ष में 75 चौविहार अथवा एक तेला करें।

सिल्वर की राखी : एक वर्ष तक प्रतिदिन 20 मिनट धार्मिक पुस्तक पढ़ें।

नॉर्मल राखी : एक फल अथवा एक सब्जी का वर्ष भर त्याग करें।

6 पढ़कर देखो, अच्छा लगेगा

गुरुदेव के तीन स्लोगन

(1) कट्टर नहीं पवित्र बनो।

(2) सामायिक हमारी पूजा है।

(3) मुखवस्त्रिका हमारी पहचान है।

गुरुदेव की वाणी

जेब में मोबाइल हो या ना हो,

बालों में स्टाइल हो या ना हो, पर!

चेहरे पर स्माइल हमेशा होनी चाहिए।

गुरुदेव की वाणी

पत्थर भले ही 100वीं चोट में टूटता हो पर काम तो 99 चोटें ही करती हैं। इसलिए हार मत मानो और प्रयास करते रहो।

गुरुदेव! आप में इतनी उदारता

एक परिवार गुरुदेव के दर्शनार्थ तब आया, जब प्रवचनोपरांत श्रोतागण पंक्तिबद्ध थे, बीच में ही वो परिवार अर्ज करने लगा- बेटे को फूड पाइप में परेशानी है। डॉक्टर के पास शीघ्रता से जाना है। तभी गुरुदेव ने सब जगह से ध्यान हटाकर उस नवयुवक के गले पर हाथ फिराया और कहा- जाओ शीघ्र खुशखबरी सुनाना। धन्य हैं गुरुदेव।

यूँ भी हो सकता है

श्रावक संतों से नाम रखवा लेते हैं, पर पसंद ना आए तो बदलने में भी देरी नहीं लगाते। गुरुदेव के पास एक परिवार आया और कहने लगा- गुरुदेव! कोई नाम बता दो। गुरुदेव उनके मूड को समझकर कहने लगे- भाई! हम नाम बताते नहीं, डायरेक्ट रखते ही हैं। परिवार की सारी काल्पनिक गुंजाइश हवा हो गई।

वाचस्पति गुरुदेव की पुण्य तिथि पर गुरुवर बोले.... आज हमें रोकने- टोकने गुरु म. नहीं आएँगे, तपस्वी जी नहीं आएँगे। भगवन् नहीं आने वाले, वाचस्पति गु. नहीं आएँगे। हमें खुद ही प्रलोभन और प्रतिकूलताओं को झेलते हुए संयम मार्ग पर आगे बढ़ना है।

तपस्या समाधान है

श्रावक श्री बृहमोहन (खिड़वाली) की धर्मपत्नी ने पीतमपुरा चातुर्मास में जिंदगी की पहली अठाई की और उसका सुफल यह रहा कि अठाई के दौरान ही पथरी सहज भाव से निकल गई।

श्राविका ने बाद में एक ही बात कही- गुरुदेव! आपने प्रेरणा दी, मैंने अठाई की और घर में मंगल हो गया।

चरणों में नत हो गई। हर्ष-हर्ष, जय-जय।

शीर्षक चुनो

गुरू म. ने संबंधों पर फरमाते हुए कहा कि अपने परिवार के लिए निम्नोक्त में से एक शीर्षक चुनें- 1. पति, पत्नी और वो, 2. जोरू का गुलाम, 3. आमदनी अठन्नी खर्चा रूपैया, 4. बाप नंबरी बेटा दस नंबरी, 5. हम हैं राही प्यार के, 6. हम साथ-साथ हैं, और 7. घर एक मंदिर है।

क्या आपने शीर्षक चुन लिया?

स्वास्थ्य और संस्कार में प्रकाशित सभी लेखों के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं।
किसी भी लेख व विचार की मौलिकता का दायित्व लेखक का होगा।
सभी प्रकार के विवादों का न्यायक्षेत्र नई दिल्ली ही होगा।

7

शिवराम पार्क क्षेत्र का इतिहास

(युवा मनीषी श्री मनीष मुनि जी म.)

नांगलोई से दक्षिण में ढाई किमी. और उत्तम नगर से उत्तर में सात कि.मी. शिवराम पार्क क्षेत्र है। यहाँ जैन स्थानक बनने से पूर्व स्व. लाला प्रेमचंद जैन के निवास स्थान पर साधु-साध्वी रुकते थे। बाद में लाला रामकुमार जैन बहादुरगढ़ वाले (हाल रोहिणी से. 3) के जैन स्कूल (गली नंबर 11) में ठहरने लगे। फिर गली नंबर 10 में लाला रघुनाथ जैन के घर रुकते थे। ला. टेकचंद जैन (कहसून) ने स्थानक निर्माण में ईंटें-लकड़ी -ग्रिल्स आदि दीं। मुख्य आर्थिक सहयोग ला. रघुनाथ जैन (धामड़ वाले), रामकुमार जी (बहादुरगढ़) ने दिया।

स्थानक 200 गज में बनी है और तीन तरफ से खुली है। सन् 2005 में स्थानक बनकर पूर्ण तैयार हुई। प्रथम प्रधान ला. प्रेमचंद जैन, इसके बाद क्रमशः ला. रामकुमार जैन, करणसिंह जैन और सुरेन्द्र जैन (2014-2022) बने। वर्तमान में संरक्षक सुरेन्द्र जैन, प्रधान इन्द्र जैन, उपप्रधान राजेश जैन (कहसून), राजीव जैन, महामंत्री राकेश जैन, कोषाध्यक्ष नरेश जैन।

प्रमुख श्रावक- ला. प्रेमचंद जैन, ला. रघुनाथ जैन, श्री रामकिशन जैन, महावीर प्रसाद जैन, नानू राम जैन, अनंत जैन, तिलकराज जैन, दिलीपचंद जैन। पहले क्षेत्र में 5-7 घर थे, अब वर्तमान में 70 घर हैं।

ग्रामवासी- कहसून, धागड़, अटला, बाल पबाना, जींद, किरठल, सिंघाणा, शामड़ी आदि।

गौत्र- मित्तल, गोयल।

दीक्षा- यहाँ सन् 2007 में मेरु जी एवं मणि जी की साध्वी मनीषा जी के चरणों में दीक्षा हुई।

चातुर्मास-

(1) साध्वी मुनेश देवी जी म. एवं सा. मुक्ता जी म. (श्रमण संघ) ने सन् 2000 में लाला राम कुमार जी के भाई के घर चातुर्मास किया था।

(2) स्थानक में प्रथम चातुर्मास सा. मनीषा जी म. और सा. मुक्ता जी म. ठाणे-2 (श्रमण संघ) का सन् 2006 में हुआ।

(3) सन् 2008 शिवेन्द्र मुनि ठाणे।

(4) सन् 2012 महासाध्वी श्री शशिप्रभा जी म.

(5) सन् 2014 श्री एषणा जी म. ठाणे-4

नोट - वर्तमान में श्री शशिप्रभा जी म. अपनी व्यक्तिगत संस्था में ठाणापति है।

न हम-सफर न किसी हम नशीं से निकलेगा
हमारे पांव का काँटा है हमी से निकलेगा

8 जिज्ञासा और समाधान

प्रश्न - वर्तमान में पाप बढ़ रहे हैं। पापी नरक में जाते हैं, फिर भी जनसंख्या घटती नहीं है। ऐसा क्यों होता है?

उत्तर - सभी पाप करने वाले नरक में ही जाते हैं, ऐसा नहीं है और सभी मनुष्य मरकर मनुष्य ही होते हैं, ऐसा भी नहीं है। पाप करने वाले नरक और तिर्यंच गति में जाते हैं, वैसे ही निम्न कोटि के मनुष्य और देव भी बन सकते हैं।

मनुष्य भव में आने वाले जीव चारों गति के हो सकते हैं। पाप करके मरने वाले जीव दूसरे हैं और जन्म लेने वाले जीव दूसरे हैं। जिन जीवों का मनुष्य-आयुष्य बंधता है, वे आकर मनुष्य भव में जन्म लेते हैं।

यदि मनुष्य आयु के बंध वाले जीव अधिक हैं, तो मनुष्य की जनंसख्या बढ़ेगी, फिर भी मनुष्य की संख्या नियत संख्या से ऊपर मनुष्य लोक में नहीं जाती है। किसी प्रदेश में मनुष्य का जन्म अगर अधिक है तो किसी प्रदेश में कम भी है। जो पापकर्म करते हैं, वे अशुभगति में जाते हैं। जो जीव प्रकृति से विनीत आदि हैं, वे मनुष्य भव में आते हैं।

मनुष्य पाप करे, तो जनसंख्या घटे, यह आवश्यक नहीं है, क्योंकि पाप करने वाले मनुष्य अन्य गति में चले जाते हैं, परंतु दूसरी गति वाले जीव मनुष्य में आकर पैदा होते हैं।

जनसंख्या बढ़ने के दो कारण ध्यान में आते हैं। एक तो आभ्यन्तर कारण यह है कि जीव यदि आयुष्य कर्म पूर्ण लेकर आया हो तो जनसंख्या बढ़ती नजर आती है। दूसरा बाह्य कारण है- प्लेग, युद्ध, लम्बी बीमारियाँ इन पर नियंत्रण होने से इनमें भी कमी आयी है। अतः जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। इसलिए जनसंख्या की वृद्धि में और पाप-कार्यों में कोई सम्बन्ध नहीं है।

प्रश्न- क्या बंदर को मनुष्य का पूर्वज मानना ठीक है?

नहीं! 'मनुष्यगतिनाम कर्म' के उदय से मनुष्य जन्म मिलता है और तिर्यंचगतिनामकर्म के उदय से जीव वानर (बन्दर) बनता है। तिर्यंचगति और मनुष्यगति, दोनों गतियाँ भिन्न हैं। तिर्यंचगति में से मनुष्यगति का विकास हुआ है, ऐसा कहना और मानना भ्रम है। दोनों गतियाँ अपने आप में स्वतंत्र हैं।

आधुनिक डार्विन का विकासवाद या आज के वैज्ञानिकों का यह प्रतिपादन है कि मनुष्य का विकास वानर से हुआ है परन्तु प्रश्न यह होता है कि सभी वानर एक से वातावरण में रह रहे थे। उस वातावरण में रहते हुए उनमें से कुछ वानर मनुष्य बन गए। कुछ वानर, वानर ही रहे, यह तो स्वच्छन्द कल्पनामात्र है। एक ही वातावरण में रहने वाले सभी जीवों पर उस विकास का प्रभाव पड़ना चाहिए। कुछ जीवों पर उस विकास का प्रभाव पड़ा, वे मानव बन गए और कुछ जीवों पर उस विकास का प्रभाव नहीं पड़ा। इसका क्या कारण?

तर्क देते हुए यह कहना कि मनुष्य बनने वाले वानर अपने अवयवों का विशेष उपयोग करते हुए मनुष्य बन गए, ठीक नहीं है। क्योंकि ऐसी अंतःप्रेरणा किसी एक जाति के जीव में एक साथ नहीं हो और कुछ जीवों में हो, तो उनके ये अवयव विशेष कार्यशील हो सकते हैं। परन्तु वे अवयव ही परिवर्तित हो जाये यह सम्भव नहीं है।

बंदर कितना भी खड़ा रहकर चले, परन्तु फिर

भी वह भी वह हाथ टिकाकर ही चलने लग जाएगा। क्योंकि उसकी रीढ़ की हड्डी की बनावट ऐसी ही है। मनुष्य का बालक भले ही हाथ टिकाकर चलता है, परन्तु कुछ समय बाद वह स्वयं ही खड़ा रहकर चलने लग जाता है। क्योंकि उसकी रीढ़ की हड्डी की बनावट सीधी है। इसलिए 'उपयोगितावादी' सिद्धान्त जीव की जाति में परिवर्तन का हेतु नहीं बन सकता। इसलिए मनुष्य-मनुष्य और वानर-वानर ही है।

जैसे कि कोई बीज से आम उगाते हैं और कोई कलम से उगाते हैं। कलम से उगे हुए आम की जाति में भले ही परिवर्तन हो जाता है, परन्तु पुनः उस विकसित जाति के आम के बीज बोए जाने पर, वह विकसित जाति का आम पैदा नहीं हो सकता। इसलिए कोई बंदर मनुष्य रूप में विकसित हो गया हो, तो उस मनुष्य से मनुष्य पैदा नहीं हो सकता। उससे बंदर ही पैदा होना चाहिए।

इसलिए जैन सिद्धांत के अनुसार मनुष्य वानर में से पैदा नहीं हुआ है। बंदर को मनुष्य का पूर्वज मानना अनुचित है।

9 पाँचवाँ आरा (कर्मभूमि)

- चौथे आरे के समाप्त होने पर पाँचवाँ आरा लगता है। इस आरे में प्रायः दुःख ही होता है। इसलिए इसे दुषमा कहते हैं। यह आरा 21,000 वर्ष का होता है।
- लगते पाँचवें आरे में 6 संहनन और 6 संस्थान तथा उतरते आरे में सेवार्त संहनन और हुण्डक संस्थान।
- पाँचवें आरे के प्रारंभ में गति पाँच होती है और जम्बू स्वामी के निर्वाण के बाद गति चार रहती है। पाँचवें आरे के लक्षण और पाँचवें आरे का अंतिम समय-

1. राजधानी, नगर, ग्राम जैसे होंगे।
2. ग्राम, श्मशान जैसे होंगे।
3. भले कुल के मनुष्य दासत्व करेंगे।
4. प्रधान नेता धन के लालची होंगे।
5. राजा यम के समान कठोर होंगे।
6. भले कुल की स्त्रियाँ लज्जा रहित होंगी।
7. भले कुल की स्त्रियाँ वेश्या के समान कर्म करेगी।
8. पुत्र पिता को छोड़कर चले जायेंगे।
9. शिष्य गुरु के अवगुण बोलेंगे।
10. दुर्जन लोग सुखी होंगे।
11. सज्जन लोग दुःखी होंगे।
12. दुष्काल, दुर्भिक्ष बहुत पड़ेंगे।
13. सर्प, बिच्छू, डांस, मच्छर आदि क्षुद्र-उपद्रवकारी जीवों की उत्पत्ति अधिक होगी।
14. ब्राह्मण धन के लोभी होंगे।
15. हिंसा धर्म का उपदेश बहुत-बहुत होगा।
16. एक धर्म के अनेक भेद होंगे।
17. मिथ्यात्वी देवों की पूजा बहुत होगी।
18. मिथ्यात्वी लोगों की संख्या बढ़ेगी।
19. मनुष्य को देव दर्शन दुर्लभ होगा।
20. विद्यार्थियों की विद्या का प्रभाव कम होगा।
21. दूध, दही, घी, तेल, शक्कर आदि में शक्ति-चिकनाई कम होगी।

22. हाथी, घोड़े, बैल आदि का आयुष्य-बल कम होगा।
23. साधु-साध्वियों को मासकल्प और वर्षावास करने योग्य क्षेत्र कम होंगे।
24. साधुओं की 12 भिक्षु प्रतिमा का विच्छेद होगा।
25. गुरु, शिष्यों को पढ़ायेंगे नहीं या पढ़ाने में भेदभाव करेंगे।
26. शिष्य क्लेशकारी होंगे।
27. अधर्मी, क्लेशी, कदाग्रही, धूर्त लोग अधिक होंगे।
28. आचार्यों की अलग-अलग समाचारी होगी।
29. सरल, भद्र, न्यायिक व प्रामाणिक पुरुष कम होंगे।
30. म्लेच्छ राजा अधिक होंगे।
31. हिन्दू राजा अल्प ऋद्धि वाले होंगे।
32. अच्छे भले कुल के राजा नीच कार्य करेंगे।

- इस आरे में क्रमशः उत्तम धातु का नाश होगा। मात्र लोहे की धातु रहेगी। चमड़े (प्लास्टिक, कागज) की मोहरें चलेंगी। जिनके पास ये अधिक होंगी, वे श्रीमंत कहलायेंगे।
- इस आरे में मनुष्यों को उपवास, मासखमण जैसा लगेगा।
- इस आरे में क्रमशः ज्ञान का विच्छेद होता जायेगा। अंत में मात्र दशवैकालिक के चार अध्ययन रहेंगे।
- भगवान महावीर स्वामी का शासन 21 हजार वर्ष तक चलेगा।
- इस आरे के अंत में चार जीव एक भव करके मोक्षगामी होंगे-

1. दुप्पसह नामक आचार्य।
2. फाल्गुनी नामक साध्वी।
3. जिनदास श्रावक।
4. नागिला (नागश्री) श्राविका।

- पाँचवें आरे का अंतिम समय

आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा को शक्रेन्द्र देवराज का आसन चलायमान होगा। तब शक्रेन्द्र देवराज उपयोग लगाकर जानेंगे कि आज पाँचवाँ आरा समाप्त होगा और कल छठा आरा लगेगा। यह जानकार शक्रेन्द्र देवराज भरतक्षेत्र में आकर उन चारों जीवों को कहेंगे कि कल छठा आरा लगेगा। इसलिए आप चारों आलोचना व प्रतिक्रमण करके शुद्ध बन जाओ। ऐसा सुनकर चारों जीव देव, गुरु, संघ तथा सभी जीवों से क्षमा माँगकर, निःशल्य होकर संथारा करेंगे। पश्चात् संवर्तक, महासंवर्तक नामक आंधी चलेगी, जिससे पर्वत, भवन, कोट, कुएँ, बावड़ियाँ आदि सब स्थान नष्ट हो जायेंगे। मात्र पाँच बचे रहेंगे- 1. वैताढ्य पर्वत, 2. गंगा नदी, 3. सिंधु नदी, 4. ऋषभकूट, और 5. लवण समुद्र की खाड़ी

वे चारों समाधिकरण से मरकर प्रथम देवलोक में जायेंगे। पश्चात् चार बोल का विच्छेद होगा-

1. प्रथम प्रहर में जैन धर्म।
2. दूसरे प्रहर में मिथ्यात्वियों का धर्म।
3. तीसरे प्रहर में राजनीति।
4. चौथे प्रहर में बादर अग्नि।

अभी पाँचवें आरे के लगभग ढाई हजार वर्ष बीते हैं, साढ़े 18 हजार वर्ष शेष हैं।

राह के पत्थर से बढ़ कर कुछ नहीं हैं मंजिलें
रास्ते आवाज देते हैं सफर जारी रखो

10 झिंगुर/तिलचट्टा/कॉकरोच को जानें

जागो! श्रावकों

रसोईघर की अलमारी में, बाथरूम में, मोरी में या गटर आदि में बार-बार दिखाई देने वाले झिंगुर से कौन अपरिचित है? अलमारी के किसी कोने से अचानक बाहर निकलते हुए इस जंतु को देखकर कई लोग घबरा भी जाते हैं।

यह जंतु खास करके गंदगी में उत्पन्न होता है। रसोईघर में साफ-सफाई न होने से, जूठा खाना पड़े रहने से, कचरा रहने से या मोरी की सफाई न होने से या जहाँ पर दूसरा कचरा इकट्ठा होता रहता है, वहाँ पर झिंगुर की उत्पत्ति होती है।

इस जंतु की उत्पत्ति होने के बाद उपद्रव से बचने हेतु कई लोग इस पर मारने की दवा छिड़कते हैं, जिससे कोने में रहे सभी झिंगुर सुगंध से आकर्षित होकर बाहर निकल आते हैं और दवा के पास आते ही जहर की चपेट में आकर मर जाते हैं। क्रेझी लाईन्स, लक्ष्मण रेखा इ. विषैली चॉक का प्रयोग न करें। ऐसी दवा का उपयोग करना भयंकर क्रूरता है। निर्दोष उपायों को छोड़कर ऐसी हिंसक प्रवृत्ति अपनाने से दया गुण का तो दिवाला ही निकल जाएगा। झिंगुर चउरिन्द्रिय जीव है।

झिंगुर/तिलचट्टा/कॉकरोच की रक्षा करें

(1) वाश बेसीन में, बाथरूम, संडास आदि में सतत गीलापन न रहने दें।

(2) शाम को बर्तन धोने के बाद मोरी को साफ करके सारा पानी पोंछ लें तथा मोरी की जाली पर और उसके आस-पास जब खोलना पड़े, तब केरोसिन से पोंछा लगा लें।

(3) गटर के ढक्कन को पैक बंद रखिए। जब खोलना पड़े, तब खूब ध्यानपूर्वक खोलें। ढक्कन खुलते ही झिंगुर बाहर निकल आते हैं। पैर के नीचे कहीं वे दब कर मर न जायें, इसकी सावधानी रखिए।

(4) एक बड़े चोरस डिब्बे में नारियल के छिलके, पुराने कपड़े, थोड़ा कोयला आदि डालकर उन पर खाखरा या फिर कड़क पुरी के टुकड़े रख दीजिये। इस डिब्बे को जहाँ इस जंतु की खूब संख्या हो, वहाँ पर रख दीजिए। कॉकरोच डिब्बे में भर जायेगे। 4-5 दिनों के बाद संध्या के समय में इस डिब्बे को दूर निर्जन स्थान पर जाकर खाली कर दीजिए। सारे जंतु निकल जायेंगे। डिब्बे में फिर से सारी चीजें रखकर घर में फिर से उस स्थान पर रख दीजिए। इस तरह बार-बार करने से कॉकरोच पूरी तरह से निकल जायेंगे।

(5) फिटकरी के द्रावण में केरोसीन की 3-4 बूंदें डालकर पोंछा करने से झिंगुर नहीं होते।

(6) कड़वे नीम के तेल में कपूर डालकर छिड़कने से कॉकरोच नहीं होंगे।

(7) कॉकरोच की उत्पत्ति न हो, उसके लिए देविका महादेविया प्रोडक्ट्स की बनी हर्बल दवा का उपयोग करें। यदि झिंगुर होंगे तो चले जाते हैं, मरते नहीं। यह दवा इस पते पर उपलब्ध है : हुसेन मेनोर, नं. 43, बमनजी पेटिट रोड, पारसी जनरल हॉस्पिटल की गली, कैंप्स कॉर्नर, मुम्बई-36.

11 अल्प कर्मों का बँध कैसे होता है?

1. अनासक्ति का स्वभाव रखने से।
2. संसार के कार्यों से उदासीन भाव रखने से।
3. पाँचों इन्द्रियों में विरक्त भाव रखने व उदासीनता रखने से।
4. पापभीरू का स्वभाव रखने से।
5. निंदा-टिप्पणी से परहेज रखने से।
6. क्षमा भाव में रमण करने से।
7. वैराग्य भाव में रमण करने से।
8. शुद्ध भावों में रमण करने से।
9. तटस्थ भावों में रमण करने से।
10. दया भावों में रमण करने से।
11. वीतराग वाणी पर श्रद्धा भावों में रमण करने से।
12. धर्म-आराधना के भावों में रमण करने से
13. शुभ ध्यान में रमण करने से।
14. सहनशीलता के भावों में रमण करने से।
15. स्व स्वरूप में रमण करने से।
16. विनय-विवेक भावों में रमण करने से।
17. निवृत्ति के भावों में रमण करने से।
18. कथनी-करनी की साम्यता रखने की कोशिश करने से।
19. वृत्तियों / आदतों को रूपान्तर करने का स्वभाव बनाने व गलत प्रवृत्ति को छोड़कर अच्छी बनाने से।
20. अकेलेपन में रमण करने से।
21. उपशांत भावों में रमण करने से।
22. संतोष भावों में रमण करने से।
23. सुपात्र दान की भावना रखने से।
24. निर्ग्रन्थों की संगति करने से
25. त्याग भावों में रमण करने से।
26. परिमित बोलने के स्वभाव में रमण करने से।
27. सरलता से गलती स्वीकार करने से।
28. हर प्रवृत्ति तन्मयता से करने से।
29. आज्ञाओं के पालन में लीन रहने से (भगवान, गुरु, माता-पिता व जीवन का उत्थान करने वालों की आज्ञा)।
30. यथार्थ भावों में रमण करने से।
31. पुरुषार्थशील स्वभाव में रमण करने से।

सावधानी Be Careful Be Careful Be Careful Be Careful सावधानी

चीन का एक व्यापारी लगभग 65 लाख का सौदा करने के लिए भारत से आये एक व्यापारी से चीन के होटल में मिला। मीटिंग चल रही थी। परंतु, होटल में मँगवाई गई चाय में मक्खी आ जाने की वजह से सौदा नहीं हो पाया। इससे क्रोधित हो उठे चीन के उस व्यापारी ने एक साल में 65 लाख मक्खियों को यमसदन पहुँचा दिया।

12 भारतीय इतिहास के विस्मृत महानायक

चक्रवर्ती सम्राट अशोक (304-232 ई.पू.)

चक्रवर्ती सम्राट अशोक विश्वप्रसिद्ध एवं शक्तिशाली मौर्य राजवंश के महान सम्राट थे। सम्राट अशोक का पूरा नाम 'देवानांप्रिय अशोक मौर्य' (राजा प्रियदर्शी, देवताओं के प्रिय) था। उनका राज्यकाल ई.पू. 269-232 तक था। मौर्य वंश के चक्रवर्ती सम्राट अशोक ने अखण्ड भारत पर राज्य किया। उनका मौर्य साम्राज्य उत्तर में हिन्दुकुश, तक्षशिला की श्रेणियों से लेकर दक्षिण में गोदावरी नदी, सुवर्णगिरी पहाड़ी के दक्षिण मैसूर तक तथा पूर्व में बांग्लादेश, पाटलीपुत्र से पश्चिम में अफगानिस्तान, ईरान, बलूचिस्तान तक पहुँच गया था। सम्राट अशोक का साम्राज्य आज का सम्पूर्ण भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, म्यांमार के अधिकांश भूभाग पर था। यह विशाल साम्राज्य उस समय से आज तक का सबसे बड़ा भारतीय साम्राज्य रहा है। चक्रवर्ती सम्राट अशोक विश्व के सभी महान एवं शक्तिशाली सम्राटों एवं राजाओं की पंक्ति में हमेशा शीर्ष स्थान पर रहे हैं।

पुष्यमित्र शुंग (185-149 ई.पू.)

पुष्यमित्र शुंग प्राचीन भारत के शुंग राजवंश व शुंग साम्राज्य के संस्थापक और प्रथम राजा थे। इससे पहले वे मौर्य साम्राज्य में सेनापति थे। 185 ईसा पूर्व में पुष्यमित्र ने अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ का वध कर स्वयं को राजा घोषित किया। उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया और उत्तर भारत का अधिकतर हिस्सा अपने अधिकार क्षेत्र में ले लिया। शुंग राज्य के शिलालेख पंजाब के जालंधर में मिले हैं और दिव्यावदान के अनुसार यह राज्य सांगला (वर्तमान सियालकोट) तक विस्तृत था।

महाराज विक्रमादित्य (सन् 102 ईसा पूर्व - 15 ईस्वी)

यशस्वी महाराज विक्रमादित्य उज्जैन के राजा थे। वह गर्दभिल्ल वंश के शासक थे। इनके पिता का नाम राजा गर्दभिल्ल था। महाराज विक्रमादित्य अपने ज्ञान, वीरता और उदारता के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने शकों को पराजित किया। उनके पराक्रम के कारण ही 'विक्रमादित्य' की उपाधि कुल 14 भारतीय राजाओं को दी गई।

महाराज विक्रमादित्य ने ही ईसा से 57 वर्ष पूर्व विक्रम संवत् का आंरभ किया।

आरोग्य की कुंजी

13

फाइबर (रेशा)

पिछले लेखों में हमने भोजन के सिद्धांत एवं गलत जीवन शैली से जुड़े रोगों के बारे में बात की। अब हम भोजन के मुख्य तत्वों के बारे में बात करेंगे। जैसे कार्बोहाइड्रेट्स, फाइबर, प्रोटीन, वसा इत्यादि। आज हम फाइबर यानी रेशा की बात करते हैं।

भोजन में फाइबर की अधिक मात्रा पर हमेशा जोर दिया जाता है। मोटे तौर पर माना जाता है कि फाइबर की पर्याप्त मात्रा भोजन में होने से कब्ज की समस्या नहीं होती। लेकिन यह सिर्फ कब्ज के लिए ही नहीं, बल्कि मोटापा, डाइबिटीज, हृदय रोग और कुछ तरह के कैंसर से भी बचाता है। दरअसल फाइबर से इंफ्लामेशन और संक्रमण का खतरा शरीर में घटता है। ऐसा फाइबर जो पानी में घुलकर जेल जैसा हो जाता है, उसे डाइटरी फाइबर या सॉल्यूबल फाइबर (घुलनशील)। दूसरा फाइबर अघुलनशील होता है। घुलनशील ज्यादा फायदेमंद है।

क्यों जरूरी है - भोजन में पाए जाने वाले अन्य तत्व कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन की तरह पाचन तंत्र फाइबर को तोड़कर पचा नहीं पाता। यह आँतों से होता हुआ शरीर से बाहर निकल जाता है। साथ ही अपने साथ आँतों में पाई जाने वाली तमाम अशुद्धियाँ भी बाहर निकाल देता है, जिससे पाचन तंत्र की सेहत सुधरती है। आँतों में पाए जाने वाले हेल्दी बैक्टीरिया की मात्रा बढ़ाता है। इससे ब्रेस्ट कैंसर और आँतों के कैंसर का खतरा कम होता है।

फाइबर की मात्रा कैसे बढ़ाएं- इसे भोजन में धीरे-धीरे से बढ़ाएँ। जैसे जूस की जगह फल खाएँ। चावल, ब्रैड, पास्ता, नूडल्स की बजाय साबुत अनाज खाएँ जैसे जौ का दलिया, ज्वार की खिचड़ी, बिना छने आटे की रोटी (चोकर), स्नैक्स में चिप्स व तले भुने नमकीन की बजाय स्प्राउट्स, शकरकंद की चाट, मखाना भेल आदि लें। ऐसे ही शेक, स्मूदी या सलाद में चिया सीड्स (भीगे हुए), बिस्कुट, रस्क की जगह नट्स और सीड्स (सूरजमुखी, कद्दू, अलसी) आदि लें।

कितना और किसको फाइबर चाहिए - एक स्वस्थ व्यक्ति को प्रतिदिन 28 ग्राम फाइबर की जरूरत होती है। पर उम्र शारीरिक रचना और एक्टिविटी के आधार पर यह अलग होती है। जैसे 14 से 19 साल के लड़कों को 38 ग्राम, लड़कियों का 26 ग्राम। 50 साल से कम पुरुषों को 35 ग्राम, महिलाओं को 28 ग्राम। 50 साल से अधिक पुरुषों को 28 ग्राम, महिलाओं को 22 ग्राम जरूरी है।

फाइबर से बीमारियों का खतरा कम होता है। पर्याप्त मात्रा में फाइबर से कोलेस्ट्रॉल और बी.पी. की समस्या नहीं होती। फाइबर कैलोरी के अन्य स्त्रोत जैसे फैट आदि से भी कैलोरी खींच लेता है। इससे वजन नियंत्रित रहता है। फाइबर आँतों में अच्छे बैक्टीरिया को बढ़ाता है और आँतों का इम्यून सिस्टम सुधरता है। फाइबर इंसुलिन की प्रतिक्रिया को बेहतर करता है, जिससे शुगर नियंत्रित रहती है।

फाइबर टिप्स- हर बार भोजन में सब्जी, दाल, बिना छने या मोटे अनाज की रोटी लें।

- दिन में 2-3 फल लें।
- भोजन में अनाज का आधा हिस्सा साबुत अनाज की खिचड़ी, दलिया आदि के रूप में लें।
- अलसी, चिया सीड्स, ओट्स, सलाद, फलों, बीन्स में फाइबर भरपूर मात्रा में होता है। इनका उपयोग करें।

- रूचिका जैन (जीवनशैली विशेषज्ञ)

मो. नं. - 9876610491

14 निष्ठा संपन्न श्रावक श्री अशोक जैन

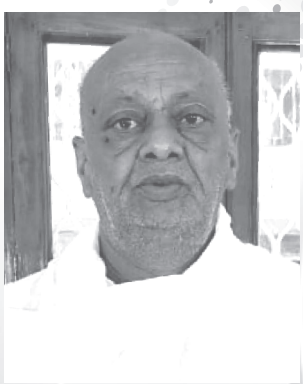

स्व. लाला श्री मोतीराम जैन; 'मयाराम गण' के यशस्वी श्रावक थे। उनके 4 सुपुत्रों में ज्येष्ठ सुपुत्र श्री अशोक जैन हैं। इस परिवार का पुरातन संबंध घसो और नरवाणा से है।

पूज्यपाद शास्त्री गुरुदेव श्री पद्मचंद्र जी म. के सन् 1972 के नरवाणा चातुर्मास से आप गुरु परंपरा के साथ जुड़े। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्राविका मीना देवी (नंगूरा) है। श्राविका श्री के बाबा श्रावक श्री ने वाचस्पति गुरू को नंगूरा से विहार करने से रोकते हुए नियमवश 108 सामायिक लगातार एक आसन पर सिर की चोटी को खूंटी से बांध कर की, ताकि नींद के झटके न लगें। इनके साथ संबंध जुड़ने में तपोधनी गुरुदेव की महत्ती कृपा हुई थी। आपके दो सुपुत्र विजय जैन और विनय जैन हैं, जो कुल की शोभा को अपने संस्कारी और सौम्य जीवन से वृद्धिंगत कर रहे हैं।

गुरुदेव बहुधा अपने प्रवचनों में फरमाते हैं कि श्रावक अशोक की माँ के हाथ का खाना हमने नरवाणा चातुर्मास में खाया हुआ है। आज आप संपूर्ण मदन-गण के उपासक हो। सब महापुरुषों की कृपा आपने पाई है। आप मुनिराजों को संयम में बढ़ते हुए देख बहुत प्रसन्न होते हैं। आज बहुत संतुष्ट और प्रसन्नतापूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

आप प्रवचनों को ध्यान से सुनकर अपने जीवन में उतारते हैं तथा अन्यों को भी प्रेरित करते हैं। गुरुदेव की आप पर बहुत कृपा है। आप अपनी कोई भी बात उन्हें कह कर निश्चिंत हो जाते हैं। **आपका पल-पल धर्माराधना में व्यतीत हो। हार्दिक कामना।**

15 बालरत्न अर्हन् जैन

निष्पक्ष और नि:स्वार्थ भाव से गोचरी करवाने का लाभ लेने वाले श्री अजित जैन (राजपुर-सोनीपत) सेक्टर-13, एकता अपार्टमेंट (दिल्ली) में निवास करते हैं। आपके सुपुत्र का नाम है- अर्हन् जैन। ... यह बालक प्रात:काल शीघ्र उठकर गुरुदेव के वीर अपार्टमेंट के प्रवचन में आया।

बालक की निष्ठा और मनोहर अदाओं ने गुरुदेव की नजरों को खींचा। अर्हन् जैन! एक बात तो निश्चित है तुम जहाँ कदम धरोगे सफलता से भरपूर होकर लौटोगे। खूब आगे बढ़ो।

हमारी शुभकामनाएँ सदा आपके साथ हैं।

16 बताओ ये साध्वी कौन हैं?

(युवा मनीषी श्री मनीष मुनि जी म.)

बताओ ये महासाध्वी कौन हैं?

हंदि धम्मत्थकामाणं, णिग्गंथाणं सुणेह मे।
आयारगोयरं भीमं, सयलं दुरहिट्ठियं॥

हे देवानुप्रियो! धर्म और मोक्ष के अभिलाषी मुनि का सारा आचार गोचर जो कि कर्म रूपी शत्रुओं के लिए भयंकर है तथा जिसे धारण करने में कायर पुरुष घबराते हैं, ऐसी चर्या का मैं वर्णन करता हूँ। अतः सावधान होकर सुनो।

एक बालिका का जन्म सोनीपत (हरियाणा) के निकट रोड का मोहाना ग्राम में समृद्धिवान कुल में हुआ। पर सारी समृद्धि बालिका को अवृद्धि और विपत्ति प्रतीत हुई। यह विशाल संसार बालिका को मकड़जाल-मायाजाल लगा। हर सुख में छिपा दुःख अनुभूत हो गया। संसार में रहना भोगों के रोगों में सड़ना और गलना है। जैसे नाली का कीड़ा नाली में कुलबुला कर मर जाता है, वैसा ही संसारावास है।

वैराग्य से भरी बालिका ने गुरुणीवर्या के चरणों में दीक्षा अंगीकार की। दीक्षित साध्वी जी ने स्वाध्याय और संयम में अपना तन-मन होम दिया। परिणामस्वरूप साध्वी जी स्वल्प समय में आगमज्ञ और कठोर संयमपालिका बन गई।

उनके कठोर संयम को देखकर हर कोई आश्चर्यचकित हो जाता था। कितने ही कष्ट और प्रलोभन आये, आप संयम में अविचलित रहती थी। मानवीय और तिर्यंच संबंधित कष्टों की क्या बात, दैविक कष्ट भी आपको साधना से विचलित नहीं कर सकते थे। साधना के लिए भूख-प्यास-सर्दी-गर्मी-डांस-मच्छर -गाली-पिटाई हर चीज मंजूर थी, पर साधना में स्वल्प सी स्खलना आपको स्वीकार्य नहीं थी। रोग से मरना-तड़पना मंजूर था, पर दोष-सेवन स्वप्न में भी सम्भव नहीं था। सूक्ष्म-स्थूल हर अहिंसा की पालना करूँगी, चाहे लाख प्रतिकूलतायें सहनी पड़े- ऐसा आपका संकल्प था। छोटे से छोटे जीव की रक्षा हेतु हर परेशानी आपने सीने पर झेली, पर एक सूक्ष्म से जीव की भी विराधना नहीं की।

सत्य महाव्रत आपके लिए जीवन का शीर्षमणि था। गला कटवाना मंजूर था, पर सत्य में कोताही स्वीकार नहीं थी। घोर ब्रह्मचर्य ने आपको गंगा सा पवित्र बना दिया था। शिशु सी निर्विकारिता आपके तन-मन पर अठखेलियाँ करती थीं। हर बाहर जाती साँस कहती थी- भोग निस्सार है और अंदर आती साँस कहती थी- ब्रह्मचर्य जीवन का सार है।

आप इस सार और प्रसाद को जन-जन में बाँटती थी। आपका जीवन शुद्धि पर विशेष जोर था। भक्तों को आप ब्रह्मचर्य की गंगा में नहाने की प्रेरणा देती रहती थी।

आपकी प्रेरणा बड़ी जानदार और दमदार होती थी। आपकी प्रेरणा से एक बार सामूहिक 250 जोड़ों ने जीवन-पर्यंत के लिए ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया। आप जिस भी क्षेत्र में पधारती, वहाँ 2-3 जोड़े अवश्य ब्रह्मचर्य व्रत के लिए तैयार हो जाते थे। आपके चरणों में

अनेक आत्माओं ने दीक्षा ली। आप खुद भी अनुशासन में रहती थी और शिष्याओं को भी पूर्ण अनुशासन में रखती थी। आपकी तीन शिष्याओं के नाम उपलब्ध होते हैं- 1. श्री सदाकुंवर जी म., 2. श्री बेनती जी म.और 3. श्री सजना जी म.।

महासाध्वी श्री सदाकुंवर जी म. की लिपि बहुत सुंदर थी। उनके द्वारा लिखित तीर्थंकर नेमनाथ का बयाला सन् 1841 का मिलता है। आपके समान आपकी शिष्याएँ भी श्रुत और चारित्र की पारगामी थीं। अंतिम समय में समाधिपूर्वक आप संसार से विदा हुई।

(1) बताओ ये साध्वी कौन हैं?

(2) इनकी माता का नाम बताओ।

(3) इनकी गुरुणी का नाम बताओ।

(4) इनकी दीक्षा कौन से सन् में हुई?

आप का उत्तर : ....

सबसे पहले सही उत्तर भेजने वाले को पुरस्कृत किया जायेगा।

फोटो लें और ई-मेल करें-
replysendhere@gmail.com

नाम.. **पिता / पति** ....

पूरा पता.. **मो.** ....

घ घड़ी

अरिहन्त वर्णमाला

घड़ी कहे कीमत करो, समय व्यर्थ मत खोय।
गया वक्त फिर ना मिले, प्रत्यक्ष में लो जोय।।

घड़ी समय का सदुपयोग करने के लिये होती है। घड़ी दो तरह की होती है- अर्वाचीन और प्राचीन। प्राचीन घड़ी काँच की होती थी। उसमें रेत डाली जाती थी। वह 48 मिनट में धीरे-धीरे एक कूपे में से दूसरे कूपे में उतरती थी। तब एक सामायिक पूर्ण होती थी। वह घड़ी हमें यह शिक्षा प्रदान करती है कि जैसे कण-कण उतरने से कूपा खाली हो जाता है, वैसे आयु भी छिन-छिन करके समाप्त हो जाती है। अतः समय मात्र का प्रमाद न करके जीवन को सार्थक करो।

दूसरी घड़ी अर्वाचीन, जिसे वॉच कहते हैं। वॉच में 5 अक्षर है।

WATCH

Watch you Words = अपने शब्दों का सदा ध्यान रखो।
Watch you Action = अपनी क्रिया का सदा ध्यान रखो।
Watch you Thoughts = अपने विचारों का सदा ध्यान रखो।
Watch you Character = अपने चरित्र का सदा ध्यान रखो।
Watch you Heart = अपने दिल का सदा ध्यान रखो।

Just For Kids

प्रकोष्ठ-5-प्रतियोगिता-युवा मनीषी श्री मनीष मुनि जी म.-प्रकोष्ठ-5-प्रतियोगिता-बताओ ये साध्वी कौन है-प्रकोष्ठ-5-प्रतियोगिता

17

Just For Kids

= 10 Kg

= 20 Kg

= 24 Kg

एक शब्द में उत्तर दीजीए

- गर्मी में लगने का डर
- हिन्दू धर्म का मूल मंत्र
- धान का एक प्रकार
- जो पैरो में पहना जाए
- एक डिग्री का नाम

- केवल 14 साल तक की आयु-वर्ग के बच्चे इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं।
- सबसे पहले उत्तर भेजने वाले को पुरस्कार दिया जायेगा।

पूरा नाम.. पिता ....आयु ....

पता..मो...........................

क्लिक करें और ई-मेल करें- replysendhere@gmail.com

उत्तर भेजिये इनाम पाइये

आपकी जानकारी के लिए

(1) पूर्ण अंक प्राप्तकर्ता तथा प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्तकर्ताओं को ही पुरस्कार दिया जाता है। यदि प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्तकर्ता अधिक संख्या में है तो सबसे पहले उत्तर भेजने वाले को वरीयता दी जाएगी।

(2) परिणाम एवं उत्तर इसी पत्रिका के अगले अंक से जान सकते हैं।

सही विकल्प का चयन करते हुए जो-जो उत्तर सही हो वही ब्लैंक में भरें।

उदाहरण - गु. श्री अरुणचंद्र जी म. के चातुर्मास से संबंधित सही उत्तर दें।

(A) गु. का चातुर्मास दिल्ली में है।

(B) गु. के साथ 5 साध्वियाँ भी संयुक्त चातुर्मास कर रही हैं।

(C) गु. का चातुर्मास पीतमपुरा में है।

(D) गु. ठाणे-6 से विराजमान है।

उत्तर - A, C, D

प्रश्न-1. खूनी से मुनि कौन बने?

(A) अर्जुनमाली (B) गजसुकुमाल

(C) दृढ़प्रहारी (D) प्रभव

उत्तर - .....

प्रश्न-2. महावीर के शासन में तीर्थंकर गोत्र बाँधा।

(A) रेवती (B) भद्रा

(C) सुलसा (D) जयंती

उत्तर - .....

प्रश्न-3. किस तीर्थंकर की पुत्रवधु नरक में गई?

(A) अजितनाथ (B) पार्श्वनाथ

(C) ऋषभदेव (D) शांतिनाथ

उत्तर - .....

प्रश्न-4. कोणिक राजा अभी है?

(A) 6वीं नरक (B) तिर्यंच

(C) चौथी नरक (D) देव

उत्तर - .....

प्रश्न-5. किसने कहा- हे देवानुप्रिय! यह तुम्हारी लब्धि का आहार नहीं है।

(A) कृष्ण महाराज (B) ढंढण मुनि

(C) भगवान नेमिनाथ (D) देवकी

उत्तर - .....

प्रश्न-6. किनकी छद्मस्थ अवस्था 4 वर्ष की थी?

(A) सुविधिनाथ (B) भविनाथ

(C) पार्श्वनाथ (D) इनमें से कोई नहीं

उत्तर - .....

प्रश्न-7. लाक्षागृह का निर्माण किसके लिए हुआ?

(A) चेलना (B) कोणिक

(C) पांडव (D) सभी

उत्तर - .....

प्रश्न-8. महाविदेह में चक्रवर्ती और भरत क्षेत्र में तीर्थंकर कौन बने?

(A) शांतिनाथ (B) ऋषभदेव

(C) महावीर स्वामी (D) कुंथुनाथ

उत्तर - .....

प्रश्न-9. किनकी माता का नाम मृगावती है?

(A) मणिरथ (B) विनमि

(C) मृगालोढ़ा (D) बलश्री

उत्तर - ....

प्रश्न-10. गु. श्री अरुणचंद्र जी म. के शिष्य का नाम?

(A) अनुराग मुनि (B) अमित मुनि

(C) अतिमुक्त मुनि (D) अमन मुनि

उत्तर - ....

प्रश्न-11. किसको कहा?

तूं सातवें दिन मर कर नरक में जायेगी।

(A) नागश्री (B) कपिला दासी

(C) रेवती (D) इन्में से कोई नहीं

उत्तर - ....

पूरा नाम.................................... **पिता / पति**..

पता.. **मो.**......................

उत्तर वाले पेज की फोटो लेकर 24 अगस्त तक यहाँ ई-मेल करें- replyanswerhere@gmail.com

19 पिछले अंक की उत्तर-पुस्तिका

बताओ ये साध्वी कौन हैं- (1) श्री सीता जी म. (2) दादी गुरूणी श्री खेतां जी म.
(3) दीक्षा सन 1698 (4) शिष्या श्री खेमा जी म.

उत्तर भेजिए इनाम पाइये- निबंध लेखन प्रतियोगिता

JUST FOR KIDS : रंग भरो प्रतियोगिगता / भगवान ऋषभदेव का चिह्न वृषभ (बैल)

उत्तर भेजिए इनाम पाइये के परिणाम

निबंध लेखन

विषय : जैन समाज में शराब का बढ़ता प्रचलन और रोकने के उपाय

प्रतियोगिता के विजेताओं को हार्दिक बधाईयां

पूर्णांक प्राप्त : सुश्री नंदिनी जैन, किशनपुरा, सहारनपुर (उ.प्र.)

पूर्णांक प्राप्त : सुश्री साधना जैन, बड़ौत (उ.प्र.)

प्रथम स्थान : श्री सूर्या जैन, नकोदर रोड, जालंधर (पंजाब)

द्वितीय स्थान : श्रीमती गीतिका जैन धर्मपत्नी श्री राजीव जैन, सुनाम, जिला संगरूर (पंजाब)

JUST FOR KIDS : रंग भरो प्रतियोगिता, विजेता मनीष जैन

बताओ यह साध्वी कौन हैं? सुश्री साधना जैन, पीतमपुरा, दिल्ली

Congratulations!

20

एक गुमराह युवक के उत्थान-पतन की आश्चर्यजनक कहानी

मंत्रीश्वर सुप्रभदेव के दो पुत्र थे। बड़े का नाम था दत्त एवं छोटे का शुभंकर। शुभंकर के पुत्र का नाम था सिद्ध। एक ओर उछलती जवानी तथा दूसरी ओर विपुल संपत्ति। जैसे हवा को पकड़े रखना मुश्किल है, जैसे पारे को एक ही जगह स्थिर रखना मुश्किल है, वैसे ही विपुल संपत्ति के साथ की जवानी को मर्यादा में रखना भी मुश्किल है। युवक सिद्ध के मामले में भी यही हुआ। जहाँ शक्कर होती है वहाँ जैसे चींटियाँ आ ही जाती हैं, जहाँ गुड़ होता है, वहाँ जैसे मक्खियाँ भिनभिनाने लगती ही हैं, वैसे ही विपुल सम्पत्ति एवं जवानी का संगम जहाँ होता है, ऐसे युवक के इर्द-गिर्द बिन बुलाये मित्र जमा हो ही जाते हैं। और इसमें दु:ख की बात तो यह है कि अपने आस-पास जमा होने वाले उन मित्रों में उस युवक को अपनी शक्ति तथा अपने "रौब" के दर्शन होते हैं। सिद्ध के आस-पास मित्रों का समूह बढ़ता ही गया।

फिर तो कहना ही क्या? जैसे ढलान पानी को नीचे उतारकर ही रहता है, जैसे अग्नि रूई को जलाकर ही रहती है, वैसे कुसंग जीवन को बर्बाद करके ही रहता है। सिद्ध के आस-पास इकट्ठे हुए मित्र संस्कारी या सज्जन नहीं थे, सदाचारी अथवा सद्बुद्धि के स्वामी नहीं थे, परलोक प्रधान दृष्टि वाले अथवा मर्यादापूर्ण जीवन जीने के आग्रही नहीं थे। वे सब तो थे मौज-शौक करने वाले, इहलोक प्रधान दृष्टि वाले। उन सबको तो दिलचस्पी थी सिद्ध की संपत्ति में। वे सभी तो पागल बन जाना चाहते थे, खाने-पीने व मौज-मजे करने में। उन सब मित्रों ने मिलकर सिद्ध को जुए की लत लगा दी तथा उसे एक प्रवीण जुआरी बना दिया।

व्यापार एवं जुए में एक महत्वपूर्ण फर्क यह है कि व्यापारी को जब व्यापार में नुकसान होता है, तब उसे और ज्यादा नुकसान न उठाना पड़े, इस बारे में वह सावधान हो जाता है। परन्तु जुआरी? वह तो जुए में जैसे-जैसे हारता जाता है, वैसे-वैसे जुनूनी बनकर और ज्यादा सम्पत्ति जुए में लगाता जाता है। अलबत्ता, सिद्ध के लिए जुए के खेल में हार या जीत कोई मायने नहीं रखती थी, क्योंकि वह करोड़ों की सम्पत्ति का मालिक था। पाँच-पच्चीस लाख की जीत उसके मन को आनंद विभोर कर दे अथवा पाँच-पच्चीस लाख की हार उसके मन को उद्विग्नता के भँवर में फँसा दे, यह सम्भव नहीं था। लेकिन फिर भी, जुए के इस खतरनाक दुर्व्यसन ने उसके जीवन को पूरी तरह बर्बाद करने का काम तो कर ही दिया!

घर में उसकी उपस्थिति कम रहने लगी। व्यापार से उसका ध्यान घटता गया। शरीर की उसकी स्वस्थता में कमी आने लगी और आश्चर्य की बात तो यह हुई कि जुए के उसके व्यसन के बारे में उसके माता-पिता को कुछ पता ही नहीं लगा। पाप को प्रकट होने से रोकने में मनुष्य सफल बन जाये, यह एक बार सम्भव है, परंतु जीवन में प्रविष्ट हो चुके व्यसन को प्रकट होने से रोकने में उसे सफलता मिले, यह सम्भावना नहीं कि बराबर होती है, क्योंकि पाप का असर स्वयं व्यक्ति पर ही होता

है, जबकि व्यसन का असर उसके आस-पास वाले लोगों पर होता है। और इसमें भी जुए जैसे व्यसन की किसी को जानकारी न हो, यह सम्भावना नगण्य होती है, क्योंकि जुए के केन्द्रस्थान पर संपत्ति होती है और यह सम्भव नहीं है कि जुआरी को प्रत्येक बाजी में जीत ही मिले। इसलिए पैसा प्राप्त करने के लिए उसे घर अथवा दुकान में चोरी करनी पड़ती है अथवा अपने मित्रों से पैसे उधार लेने पड़ते हैं। तभी वह जुए के व्यसन में लंबे समय तक टिक सकता है।

सिद्ध के जीवन में यह जो भी घटना घटी, परन्तु इसी परिस्थिति में धन्या नामक कन्या के साथ उसका विवाह हो गया। कभी-कभी ऐसे प्रसंग भी घटते हैं कि जब सुशील कन्या घर में आती है, तब उसका प्रेम पाकर पुरुष गलत रास्तों से पीछे मुड़ जाता है, लेकिन सिद्ध के जीवन में ऐसा कुछ नहीं हुआ। धन्या सचमुच ही घर को धन्य बना दे, ऐसी स्त्री थी। परंतु न तो उसका स्नेह सिद्ध को गलत राह से मोड़ सका और न ही उसका सद्व्यवहार सिद्ध को अपने जीवन में प्रवेश कर चुके दुर्व्यसन के बारे में कुछ सोचने पर मजबूर कर सका। व्यसन की यही तो भयंकरता है। उसका शिकार तो व्यसनी बनता है, लेकिन उसकी सज़ा उसके समस्त परिवार को भुगतनी पड़ती है। और, व्यसनी व्यसन का इस हद तक गुलाम बन जाता है कि उस पर किसी के आँसू या किसी की व्यथा, किसी के स्नेह या किसी की भावना, स्वयं को हो रहे नुकसान अथवा स्वयं के जीवन में हो रहे पतन, इनमें से किसी भी बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जान-बूझकर अथवा अनजाने में वह सतत विनाश की ओर अग्रसर होता ही रहता है।

याद रखना, व्यसन जीवन के आरंभ में तो मुलाकाती (visitor) के रूप में आता है और यदि हम उसे कोई तवज्जों न दें तो तुरंत ही चला भी जाता है। परन्तु, केवल मुलाकाती के तौर पर मिलने कभी आए उस व्यसन की यदि हम आवभगत करें, उसका आतिथ्य-सत्कार करें, उसके प्रति अपने हृदय में नाजुक स्नेह की डोर बाँधें तो वह व्यसन मुलाकाती का स्थान छोड़कर मेहमान का स्थान ले लेता है और मेहमान के स्थान पर बैठ चुके उस व्यसन के प्रति हमारी अंतरंग प्रीति यदि बढ़ती चली जाए, तब वह व्यसन हमारे जीवन का स्वामी बन बैठता है।

इसे इस प्रकार से भी कह सकते हैं कि प्रारम्भ में मुलाकाती के भेष में जीवन में जो प्रवेश करता है, उसका नाम 'दोष' होता है। उन दोषों के प्रति हमारा प्रेम उन्हें मेहमान के भेष में 'पाप' बना देता है, और मेहमान के भेष में बैठा हुआ वह पाप आगे चलकर मालिक बन 'आसक्ति' के रूप में हमारे समस्त जीवन पर अपना आधिपत्य जमा लेता है।

वास्तव में यदि हम अपना जीवन व्यसन- मुक्त बनाए रखना चाहते हैं तो उसका श्रेष्ठ विकल्प यह है कि व्यसन जब 'पाप' की भूमिका में हो तभी हम उसे ललकारते रहें और इससे भी श्रेष्ठ विकल्प यह है कि जब वह 'दोष' की भूमिका में हो तभी हम उसके प्रति सख्ती से पेश आएँ। ऐसा करने से हम उस व्यसन से बच जायेंगे। पर्वत से प्रकट होने वाले झरने की राह में यदि कोई मजबूत पत्थर की दीवार खड़ी कर दी जाये तो झरना आगे बढ़कर 'नदी' का स्वरूप कभी नहीं ले सकता और यदि बाँध बनाकर नदी को आगे बढ़ने से

रोक दिया जाये, तो नदी 'सागर' स्वरूप कभी नहीं बन सकती।

सिद्ध के जीवन में अड्डा जमाये बैठा जुए का व्यसन देखा जाए तो उसके जीवन का मालिक बन बैठा था। जैसे मालिक अपनी इच्छानुसार अपने घर में बेरोकटोक घूम सकता है, वैसे ही जुए ने सिद्ध के जीवन के हर पल पर अपना वर्चस्व कायम कर लिया था। कभी सुबह के समय तो कभी दोपहर के समय, कभी शाम के समय तो कभी रात को, कभी पूरे दिन तो कभी पूरी रात, वह जुए के अड्डे पर ही पड़ा मिलता।

सिद्ध के दादा मंत्री थे। पिता का व्यापार फैला हुआ होने के कारण शायद उनके पास समय का अभाव था। कार्य की व्यस्तता के कारण सिद्ध के जीवन में हो रहे सर्वतोमुखी पतन की ओर शायद उनकी दृष्टि ही नहीं गई थी। संपत्ति की विपुलता एवं कार्य की अत्यधिक व्यस्तता, ये दो घटक ऐसे हैं, जो जीवन के काफी समय को बर्बाद कर देते हैं।

परिवार का जो मुखिया संपत्ति के पीछे पागल है अथवा विविध कार्यों में व्यस्त है, वह मुखिया अपने परिवार के क्षेम-कुशल के लिए, परिवार के सदस्यों में सुसंस्कारों का सिंचन करने के लिए अथवा सदाचार की सुरक्षा के लिए पर्याप्त समय नहीं निकाल पाता। इसी वजह से परिवार के सदस्य, विशेषकर युवा वर्ग, उलटे-सीधे मार्ग पर कदम रख दें, ऐसी पूर्ण सम्भावना होती है।

रात-रात भर जुए के अड्डे में पड़े रहने की सिद्ध की नादानी ने धन्या के देह की स्वस्थता और मन की प्रसन्नता को छीनना शुरू कर दिया। आखिरकार वह भी एक स्त्री थी। मन में कई अरमान संजोए वह उस घर में आई थी। मिठाई का अभाव वह शायद सहन कर लेती, सुविधाओं की अल्पता वह शायद निभा लेती, आकर्षक वस्त्रों की इच्छा को वह शायद दफन कर देती। इतना ही नहीं, पति के अलावा परिवार के तमाम सदस्यों की उपेक्षा भी वह शायद सह लेती, लेकिन यहाँ तो पति की ओर से ही उपेक्षा थी, पति की ओर से ही अवहेलना थी। *(क्रमशः)*

याद रखना, व्यसन जीवन के आरंभ में तो मुलाकाती (visitor) के रूप में आता है और यदि हम उसे कोई तवज्जों न दें तो तुरंत ही चला भी जाता है। परन्तु, केवल मुलाकाती के तौर पर मिलने कभी आए उस व्यसन की यदि हम आवभगत करें, उसका आतिथ्य-सत्कार करें, उसके प्रति अपने हृदय में नाजुक स्नेह की डोर बाँधें तो वह व्यसन मुलाकाती का स्थान छोड़कर मेहमान का स्थान ले लेता है और मेहमान के स्थान पर बैठ चुके उस व्यसन के प्रति हमारी अंतरंग प्रीति यदि बढ़ती चली जाए, तब वह व्यसन हमारे जीवन का स्वामी बन बैठता है।

21 हाँ! बहुत मजेदार है...

आजादी

एक बार एक दुबई का कुत्ता इंडिया आ गया। कुत्तों ने उसे आश्चर्य से देखा और पूछा- बड़े सुंदर दिख रहे हो भाई, कहाँ से आए हो?

कुत्ते ने कहा- दुबई से!

भारतीय कुत्ते ने पूछा- तुम दुबई छोड़ कर क्यों चले आए?

कुत्ते ने जवाब दिया : वहाँ की हवा, पानी, मौसम, रहने-खाने की सारी सुविधाएँ बेहतरीन हैं लेकिन भौंकने की जो आज़ादी इंडिया में है, दुनिया में कहीं नहीं है।

❋

किसी ने सोचा दवाई के पैकेट में 10 गोली क्यों आती है? यह प्रथा जब रावण के सिर में दर्द हुआ तब से है, क्योंकि उसके दस सिर थे।

❋

एक अंग्रेज ने एक बनिये से पूछा-

'आप अपने कर्मचारियों को समय पर ऑफिस आने के लिए कैसे प्रेरित करते हैं?'

बनिया- बहुत आसान है। मेरे ऑफिस में 30 लोग काम करते हैं और मैंने फ्री पार्किंग केवल 29 बनवाई है। 30वीं का पार्किंग चार्ज 100 रुपये है। तो 100 रुपये बचाने के लिए हर कोई एक दूसरे से पहले आने की कोशिश करता है। यह सुन कर हतप्रभ अंग्रेज ने जमीन पर लेटकर बनिये को प्रणाम किया।

❋

बैंक में लिखा था- कृपया अंगूठा लगा के हाथ दीवार पर ना पोछें।

अगर वो इतना ही पढ़ लेते तो अंगूठा क्यों लगाते?

❋

नया जादू.... एक गिलास ठंडा पानी लीजिए.... और बाजू बैठे आदमी पर डाल दीजिए..... वो तुरंत गरम हो जाएगा.... यकीन न हो तो आजमा के देख सकते हैं।

❋

अच्छा हुआ अमीर नहीं हूँ, वरना मैं भी टाइटेनिक का मलबा देखने वाले लोगों में होता और वहीं डूबकर मर जाता। गर्व है....

❋

बहु ऐसी आए जो पूरे घर का काम करें और बेटी को ऐसी ससुराल मिले जहाँ काम न करना पड़े। यहीं से शुरू होती है फसाद की जड़।

❋

शादी ही ऐसा जख्म है,
जिसमें चोट से पहले हल्दी लगती है।

❋

जिसके पास ए.सी. नहीं, उसे गर्मी से पसीना आ रहा है और जिसके पास ए.सी. है, उसे बिल देख कर आ रहा है। ऊपर वाले की नजर में सब बराबर हैं।

❋

एक शादीशुदा आदमी ने अपनी कविता में कहा-
माँग भरने की सज़ा कुछ इस कदर पा रहा हूँ।
कि माँग पूरी करते-करते माँग के खा रहा हूँ।

22 स्वतन्त्रता दिवस

अभी भी इन्तजार आजादी का

सिरफिरे हैं, वे लोग जो इस देश के भविष्य के प्रति निराश हैं, इस मुल्क के मुस्तकबिल के प्रति निराश हैं, इस मुल्क के मुस्तकबिल से मायूस हैं। सच्ची बात तो यह है कि उन्हें यह कतई मालूम नहीं है कि यह वह देश है, जिसका भूतकाल बहुत शानदार था और भविष्य उससे भी शानदार होगा। क्या हुआ अगर चन्द रोज के लिए वर्तमान थोड़ा निराशाजनक है? एक समूचे राष्ट्र के जीवन में 35-40 वर्ष होते ही क्या है? इस देश के लोग इन्तजार करने में माहिर हैं।

ये कयामत तक इंतजार कर सकते हैं, हालात के बदलने का। आखिर पिछले 40 वर्षों से इंतजार करते रहे, हालात बिगड़ते-बिगड़ते कहाँ तक आ गए, तो फिर दूसरी आज़ादी मिली कि नहीं? जनतंत्र लौटा कि नहीं? ऐसे ही जनता की खुशहाली भी लौटेगी। यह देश फिर सोने की चिड़िया कहलाएगा। कोई न कोई मसीहा आएगा एक दिन, और वह इस देश में खुदा का राज लाएगा। तब हमारी हालत खुद-ब-खुद खुशनुमा हो जाएगी।

लेकिन लोगों को इंतजार का मजा नहीं मालूम है। इसीलिए वे आगे बढ़ कर संघर्ष करने की बात करते हैं। कोई पूछे उनसे कि भले मानस, आखिर तुम्हें कुत्ते ने काटा है क्या कि बैठे-ठाले पूरी कौम की फिक्र लेकर तुम गोली खाने और जेल जाने पर आमादा हो। अरे मियाँ, इंतजार करो इंतजार। सुना नहीं है, जो मजा इंतजार में है, वह वस्ले यार में भी नहीं है। और वह जो इंग्लैंड का मशहूर शायर हो चुका है न, क्या नाम था उसका? मिल्टन। उसने भी तो यही कहा है कि जो महज इंतजार में खड़े रहते हैं, वे भी बहुत बड़ी खिदमत करते हैं। जरूर उसने हम हिन्दुस्तानियों को देखकर ही ऐसा कहा होगा।

एक आज़ादी आई थी सन् 1947 में। हमारे नेताओं ने अपने सत्य, अहिंसा के जादू से गोरे साहबों को मजबूर कर दिया था यह देश छोड़ने के लिए। बेचारे बोरिया-बिस्तर बाँध कर भाग चले और मुल्क की प्यारी आज़ादी अपने कैदखाने से निकालकर हमारे नेताओं को सौंप गए।

हमारे नेताओं ने उस आज़ादी का भरपूर फायदा उठाया। देश की जनता को देने के लिए बड़े-बड़े प्लान बनाए, विदेशों से ढेर सारे कर्ज लिए और अफसरों की एक लम्बी फौज को जीप गाड़ियों में बैठाकर गाँव-देहातों में भेज दिया। लेकिन आज़ादी थी कि किसी पारसा औरत की तरह उन नेताओं के पास ही टिकी रह गई, जिनके हाथ गोरे साहब उसे सौंप गए थे। और क्यों न टिकी रहती? वहाँ कार थी, कोठी थी, फ्रिज था, टी.वी. था। यहाँ गाँवों में क्या था? वह सब आराम छोड़कर गाँवों की धूल-मिट्टी में भाड़ झोंकने क्यों आती भला?

इस तरह आज़ादी नेताओं, अफसरों और बड़े-बड़े बिजनेसमैनों के यहाँ डेरा डाले पड़ी रही और चुपचाप इंतजार में खड़ी रही। उसे तो मालूम था- एक दिन मसीहा आएगा और जिस प्रकार से उसने आज़ादी को गोरों की कैद से छुड़ाया था, वैसे ही उसका यह नया मसीहा उस आज़ादी को नेताओं, अफसरों और धन्ना सेठों के हरम से बाहर निकाल कर गरीबों की झोपड़ी में बाइज्जत पहुँचा देगा। सो वह इन्तजार करती रही।

दूसरा मसीहा आया। उसने आवाज लगाई। लेकिन तब भी जनता अपना इंतजार का सुख छोड़कर उसके साथ चली नहीं। क्योंकि उसे तो पूर्ण आस्था है

अपने इंतजार पर। वह जानती है कि उसे आज़ादी को लिवा लाने के लिए किसी के साथ नहीं चलना है। मसीहा खुद ही आज़ादी को लाकर उसकी झोपड़ी में पहुँचा देगा। हाँ, मसीहा की आवाज पर गौर किया छुटभैयों ने। ये वे छुटभैये जो नेता बनने की ताक में थे, लेकिन केवल "विरोधी" बनकर रह गए थे। उन्हें आज़ादी का इस प्रकार कुछ खास कोठियों में ही महदूद रहना खलता था। लेकिन वे समझ चुके थे कि यह आज़ादी बड़ी पारसा है। नेताओं को सौंपी गई थी, सो नेताओं के पास ही रहेगी।

अतः उन्होंने अक्ल से काम लिया और वे मसीहा के साथ हो लिए। उन्होंने अपने नेता रूप को चमकाने का यह सुनहरा मौका हाथ से नहीं जाने दिया। वे पूरे जोर–शोर से नेता बनने के लिए आन्दोलन करने लगे। देश के एक छोर से दूसरे छोर तक हड़ताल वगैरह किया। स्कूल–कॉलेज बन्द करवाए। यहाँ तक कि नेतागिरी पर पक्की मुहर लगवाने जेल में जाकर बैठ गए और अंत में वे पक्के नेता बनकर ही जेल से बाहर निकले।

इस प्रकार छुटभैये पक्के नेता बन बैठे और पुराने नेताओं को निकाल कर उनकी कोठियों पर कब्जा कर लिया, जिससे आज़ादी को कोठियाँ नहीं बदलनी पड़ें। इन नए नेताओं ने भी अपनी–अपनी कोठियों को नई कारों, नई सजावटों, नए फ्रिजों और नए टी.वी. सेटों से सजा लिया और जमकर आज़ादी का स्वागत–सत्कार करने लगे। रही जनता, सो उसे इन्होंने समझा दिया– यह देखो, हम इतनी मशक्कत से जेल काट कर तुम्हारे लिए दूसरी आज़ादी ले आए हैं। तुम इस खुशी में नाचो–गाओ, मगन रहो और अपनी खुशहाली का इंतजार करो। हम भी अभी–अभी जेल काट कर लौटे हैं, जरा सुस्ता लें, फिर तुम्हारी खुशहाली के लिए आसमान के तारे तोड़ लाएँगे। तुम्हारी आज़ादी तुम्हारे घर में पहुँचा देंगे। और जनता तब से अपने नए नेताओं की बाट जोहती हुई, आज़ादी का इंतजार कर रही है।

हमारे नेताओं ने उस आजादी का भरपूर फायदा उठाया। देश की जनता को देने के लिए बड़े-बड़े प्लान बनाए, विदेशों से ढेर सारे कर्ज लिए और अफसरों की एक लम्बी फौज को जीप गाड़ियों में बैठाकर गाँव-देहातों में भेज दिया। लेकिन आजादी थी कि किसी पारसा औरत की तरह उन नेताओं के पास ही टिकी रह गई, जिनके हाथ गोरे साहब उसे सौंप गए थे। और क्यों न टिकी रहती? वहाँ कार थी, कोठी थी, फ्रिज था, टी.वी. था। यहाँ गाँवों में क्या था? वह सब आराम

23

तात्विक लेख

जिह्वा-लोलुपता और तप

इसमें कोई दो मत नहीं कि जीवन जीने के लिए आहार आवश्यक है। आहार के बिना सामान्य जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। आहार चार प्रकार के हैं- (1) अशन, (2) पान, (3) खादिम, (4) स्वादिम। अशन में अन्न, दाल, सब्जी, चावल, नमक, चीनी, घी आदि सभी खाद्य-पदार्थों एवं दूध, चाय, काफी, शिकंजी, शीतलपेय आदि सभी पेय पदार्थों का समावेश हो जाता है। मुख्यत: 'अशन' से ही उदरपूर्ति होती है। दूसरे आहार 'पान' में केवल पानी (जल) को लिया जाता है। 'पानी' अपने आप में एक आहार है। तीसरा आहार 'खादिम' है, जिसमें सूखे मेवे की गणना होती है। चौथे 'स्वादिम' आहार में मुख को सुगंधित करने वाले लौंग, सुपारी, इलायची, सौंफ, पान मसाला आदि की गणना होती है। हमारा जीवन इन चारों प्रकार के आहारों से चलता है। इनमें से दो प्रकार के आहार अत्यंत आवश्यक प्रतीत होते हैं- (1) अशन (भोजन), (2) पान (पानी)।

इनके अतिरिक्त जीवन के लिए एक और आवश्यक तत्व है- वायु। वायु सेवन प्रतिक्षण श्वास के माध्यम से होता रहता है। विज्ञान के अनुसार भी जीवन के लिए भोजन, जल एवं वायु (ऑक्सीजन) को आवश्यक बताया गया है। जीवन के लिए इनका संतुलित सेवन ही अपेक्षित है, असुंलित सेवन मनुष्य को अस्वस्थ बनाता है।

आहार-सेवन करते समय 'जिह्वा' एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। इसके द्वारा हमें विभिन्न प्रकार के स्वादों का बोध होता है। स्वाद का बोध कराने के कारण इसे रसनेन्द्रिय कहते हैं। मोटे तौर पर स्वाद पाँच प्रकार के हैं- खट्टा, मीठा, कटु, कषैला और तीखा। वैशेषिक दर्शन में खारा भी एक स्वाद माना गया है। इन सबके सम्मिश्रण से फिर अनेक स्वादों की रचना होती जाती है। जिह्वा में स्वाद की ग्रंथियाँ सम्यक् प्रकार से कार्य करें तो स्वाद से ही यह पता चल जाता है कि कौन सा पदार्थ शरीर के लिए हितकर है एवं कौन सा अहितकर। किन्तु स्वाद की ग्रंथियों का उपयोग मनुष्य शरीर के हित के लिए नहीं, अपितु उन ग्रंथियों से मिलने वाली उत्तेजना या भोग के लिए करने लगता है। रसनेन्द्रिय एक ज्ञानेन्द्रिय है, किन्तु मनुष्य उसे भोगेन्द्रिय के रूप में काम लेता है।

आधुनिकता के साथ इस युग में भोज्य पदार्थों एवं पेय पदार्थों का भी विकास हुआ है। कोल्ड ड्रिंक्स की सुलभता बढ़ी है। फल एवं सब्जियों की पैदावार बढ़ी है। मिठाइयों के आकार-प्रकार में आई है। उसका असर विवाह समारोहों पर भी पड़ा है, जहाँ सभी खाद्य सामग्रियों का स्वाद लेने के पहले ही पेट भर जाता है। इडली, डोसा, उत्तपम आदि अनेक भोज्य पदार्थ दक्षिण से उत्तर भारत में चले आए हैं। एक देश से दूसरे देश में भी आ-जा रहे हैं। फास्ट फूड की संस्कृति का विकास हो रहा है। यह फूड शीघ्र तैयार हो जाता है, किन्तु प्राय: पौष्टिकता रहित होता है। आइसक्रीम का प्रचलन बढ़ा है, जिसमें अखाद्य सामग्री भी मिली रहती है। बच्चों में ही नहीं बड़ों में भी टॉफी, केक, चॉकलेट आदि का स्वाद बढ़ा है। गुटखा एवं

की कहानी-प्रकोष्ठ-6-कुछ इधर-उधर से-सामाजिक गतिविधियां-प्रकोष्ठ-6-कुछ इधर-उधर से-हाँ! बहुत मजेदार है-प्रकोष्ठ-6-कुछ
उधर से-अभी भी इंतजार आजादी का-प्रकोष्ठ-6-कुछ इधर-उधर से-सामाजिक गतिविधियां-प्रकोष्ठ-6-कुछ इधर-उधर से-तात्विक लेख-प्रकोष्ठ-
राह युवक की कहानी-प्रकोष्ठ-6-कुछ इधर-उधर से-सामाजिक गतिविधियां-प्रकोष्ठ-6-कुछ इधर-उधर से-हाँ! बहुत मजेदार है-प्रकोष्ठ-6-कुछ इधर-
कुछ इधर-उधर से-अभी भी इंतजार आजादी का-प्रकोष्ठ-6-कुछ इधर-उधर से-सामाजिक गतिविधियां-प्रकोष्ठ-6-कुछ इधर-उधर से-तात्विक लेख-प्रकोष्ठ-6-कुछ

पान-मसाला जैसी सामग्रियों ने तो मनुष्य की जीभ को अपने वेश में कर लिया है।

जिह्वा की लोलुपता मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए घातक है तथा कर्म-बन्ध का बहुत बड़ा निमित्त है, तथापि यह लोलुपता निरंतर इसलिए बढ़ती जा रही है, क्योंकि हम स्वाद के अधीन हैं। जो स्वाद हमें रुचिकर लगता है, उसे हम बार-बार भोगना चाहते हैं। इसलिए कई बार उसकी अति भी कर जाते हैं। एक पुराना सूत्र उस समय स्मृति में नहीं रहता कि "जीवन के लिए भोजन है, भोजन के लिए जीवन नहीं।" शरीर में अधिकतर रोग अधिक भोजन से होते हैं, कम खाने से नहीं। मनुष्य दिनभर में न जाने कितनी बार इस जीभ को संतुष्ट करता रहता है तथा उसका दास बनता रहता है।

आहार जीवन के लिए आवश्यक है, इसमें सन्देह नहीं। किन्तु उसका अनावश्यक उपभोग आहार का दुरुपयोग है। उसका दुष्परिणाम एक ओर शरीर को रोगादि के रूप में भोगना पड़ता है तो दूसरी ओर कुछ लोग आहार-प्राप्ति से वंचित रहते हैं। आवश्यकता से अधिक आहार चित्त की विकृति को द्योतित करता है। शरीर एवं चित्त का घनिष्ठ सम्बन्ध है। चित्त में आया हुआ विकार ही मनुष्य को भोगों में प्रवृत्त करता है। साधु-साध्वियों के लिए तो मात्र संयम-यात्रा हेतु आहार कल्पता है- **जवणट्ठाए भुंजिज्जा, न रसट्ठाए।** स्वाद के लिए भोजन न करे, अपितु संयम-यात्रा के लिए भोजन करे।

जिह्वा की लोलुपता पर नियंत्रण करने के लिए संयम एवं तप परम साधन हैं। भोजन की अधिकता पर नियंत्रण संयम है। उसके लिए मन को साधना पड़ता है। मन पर संयम होगा तो रसनेन्द्रिय पर भी संयम हो सकेगा। दूसरा महत्वपूर्ण साधन 'तप' है। तप के 12 भेदों में प्रथम तप 'अनशन' है, जो जिह्वा की लोलुपता पर सीधा नियंत्रण करता है।

'अनशन' तप जिह्वा-विजय का उत्कृष्ट साधन है। किन्तु 'तप' के साथ संयम भी आवश्यक है और विवेक भी आवश्यक है। आजकल अनशन तप के प्रति प्रवृत्ति बढ़ी है। तप के 12 भेदों में अनशन का ही बोलबाला है। अनशन का अर्थ है- चारों प्रकार के अथवा तीन प्रकार के (पानी को छोड़कर) आहार का त्याग। उपवास, बेला, तेला, चोला, पचोला, अठाई, मासखमण आदि तपस्याएँ इसी श्रेणी में आती हैं। नवकारसी, पौरसी, एकाशन आदि तप भी अनशन के ही रूप हैं।

वे धन्य हैं, जो जिह्वा-लोलुपता पर विजय प्राप्त करते हैं। वे न केवल जीभ पर, अपितु अपने मन पर भी विजय पाते हैं। तप-साधना की यह प्रथम सीढ़ी है। किन्तु क्या सभी अनशन-तपस्वी अपनी जिह्वा को जीत लेते हैं? यह विचार का विषय है। फिर भी इस ओर जो विवेकपूर्वक तत्पर हैं, वे कर्म-निर्जरा तो करते ही हैं, अपने शरीर, चित्त एवं आत्मा के रोगों में भी कमी करते हैं। अच्छा यह हो कि तपस्या (अनशन) के साथ प्रायश्चित्त, स्वाध्याय, ध्यान आदि आभ्यन्तर तप का

भी आराधन हो। इसी प्रकार आभ्यन्तर तप के साथ यदि बाह्य तप भी किया जाए, तो तप की फल-शक्ति कई गुणी बढ़ सकती है। यदि 'अनशन' तप करते हुए भी आरम्भ एवं परिग्रह के सारे कार्य रुचिपूर्वक किए जाएँ तो वह निर्जरा का साधन नहीं बनता।

जिह्वा लोलुपता को कम करने के साथ सभी विकारों पर विजय का अभियान अपेक्षित है; क्योंकि जो स्वाद को जीत सकता है, स्वादलोलुप नहीं बनता, वह समस्त विषय-विकारों को जीत सकता है। वह अन्य इन्द्रिय-विषयों के प्रति भी लोलुपता को नियंत्रित कर सकता है।

स्वाद अथवा जिह्वा-लोलुपता पर विजय प्राप्त करने के लिए अन्य तप हैं- ऊणोदरी (भूख से कम खाना), वृत्ति-परिसंख्यान (भोज्य पदार्थों की लालसा का त्याग), रस-परित्याग (घी, दूध, मीठा आदि विगयों का त्याग), प्रति-संलीनता (इन्द्रिय-निग्रह)। रस-परित्याग तप का एक रूप है- आयम्बिल। इसमें जिह्वा की लोलुपता पर पर्याप्त नियन्त्रण किया जाता है। प्रतिदिन द्रव्य-मर्यादा करके भी जिह्वा को नियन्त्रित किया जा सकता है। व्यक्ति प्रतिदिन इस प्रकार का नियम ले सकता है कि वह 10 द्रव्यों (वस्तुओं), 15 द्रव्यों का अमुक संख्या जितने द्रव्यों से अधिक का एक दिन में सेवन नहीं करेगा।

सावधान स्वयं को होना होगा। यदि सावधान नहीं हुआ तो दुष्परिणाम भी स्वयं को ही भोगना होगा। जो अपने को साधना चाहता है, वह सबसे पहले अपनी जिह्वा को साधे। चिकित्सक के परामर्श पर तो हम अनेक भोज्य पदार्थों का त्याग कर देते हैं, किन्तु यह त्याग या तप नहीं है। चिकित्सक के निषेध किए बिना स्वेच्छा से यदि भोज्य पदार्थों के भोग पर हमने नियन्त्रण किया तो यह त्याग एवं तप की श्रेणी में आएगा। यही आत्मजय का मार्ग है।

साधना कोई भी हो, उसे प्रदर्शन के लिए नहीं, हम अपने हित के लिए अपनाएँ। दीर्घकालीन अनशन तप की सूची में नाम लिखवाने वाले अनेक मिल जायेंगे, किन्तु आत्म-जय की ओर वास्तव में वे कितने बढ़े हैं, यह उनके ही मूल्यांकन का विषय है।

प्रेरक-1

एक बार दु:ख को सुख मिल गया। दु:ख ने सुख से कहा, 'दोस्त, मुझसे ज्यादा तुम भाग्यशाली हो। लोग मुझे चाहते नहीं है और तुम्हें छोड़ते नहीं है।'

'तुम जैसा सोचते हो वैसा नहीं है। दु:खभाई! मुझसे ज्यादा तुम भाग्यशाली हो। क्योंकि, मेरी उपस्थिति में इंसान खुद को भी भूल जाता है, जबकि तुम्हारी उपस्थिति में लोग पराये को भी अपना बना लेते हैं।' सुख की बात सुनकर दु:ख स्तब्ध हो गया।

सदा रही सै सदा रहेगी, झगड़े की जड़ तीन...

सदा रही सै, सदा रहेगी, झगड़े की जड़ तीन।
जर, जोरू और जमीन।
इन तीनों का नशा कसूता, बुद्धि करे मलीन।
जर, जोरू और जमीन। सदा रही सै...

जर की खातिर मानस उल्टे सीधे काम करे सै रे।
डाका-चोरी, रिश्वतखोरी खुल्लेआम करे सै रे।
जर का ज्यादा होना भी तो नींद हराम करै से रे।
जर के पाछै डिगता देख्या, बड़े-बड़े का दीन।
जर, जोरू और जमीन। सदा रही सै.....

कितने कांड हुए मत पूछो इक जोरू के कारण रै।
बीच सभा को रूला गए द्रोपद के लते तारण रै।
रावण का हुआ सर्वनाश ये सबसे बड़ा उदाहरण रै।
विश्वामित्र जैसे हो गए नारी के आधीन।
जर, जोरू और जमीन। सदा रही सै.....

धरती के रोले ने लोगों करके छोड़ा बंटवारा।
खून खराबे बिना हुआ ना, इस झगड़े का निबटारा।
इसके लालच में हो गया, भाई का भाई हत्यारा।
ये तीनों जब बीच में आ जाएं, हो जाए खत्म यकीन।
जर, जोरू और जमीन। सदा रही सै.....

जर ते जोर, जोर ते जोरू, जोरू बिना सरे कोना।
जर ना हो तो जोरू भी सीधे मुँह बात करे कोना।
पेट भरे धरती से जर जोय से पेट भरे कोना।
तीनों बिना अंधेरी दुनिया, तीनों से रंगीन।
जर, जोरू और जमीन। सदा रही सै.....

25 Write what's the Right

.... का कोई प्रायश्चित नहीं है।

A. कृपणता **B.** कृतघ्नता **C.** कठोरता **D.** कर्कशता

Now! Find Correct Answer

- पानी देने में तालाब चाहे कितना ही कृपण हो, उसकी दीवार तोड़कर उसे उदार बनाया जा सकता है।
- 'मृत्यु के समय या तो सब कुछ छोड़कर जाओ और या तो सब कुछ देकर जाओ', ऐसा कोई वाक्य सुनने में आये और हो सकता है कृपण की कृपणता खत्म हो जाए।
- कठोर भूमि पर बारिश दिल देकर बरसती है और कठोर भूमि कोमल बन जाती है।
- कठोर हृदय पर जिनवचनों की मूसलाधार वर्षा होती है और कठोर हृदय कोमल बन जाता है। क क र् श ा शब्दों का उच्चारण माना किसी के लिए सहज हो गया है। अनपेक्षित संयोगों का एक प्रहार होता है और कठोर शब्दोच्चारण पर पूर्णविराम लग जाता है।
- कर्कश व्यवहार पर भी बुद्धि परिपक्व होने पर पूर्णविराम लग जाए ऐसी पूर्ण सम्भावना है।

परंतु, सड़े हुए अथवा जले हुए बीज पर माली चाहे कितना ही सम्यक् पुरुषार्थ करे, उसकी मेहनत रंग नहीं लाती, ठीक वैसे ही जिसका हृदय कृतघ्न हो चुका है, उसे कितने ही प्रेम-प्रेरणा व प्रोत्साहन कृतज्ञ नहीं बना सकते।

याद रखना, कृतघ्नता ऐसी ऊसर भूमि है, जो कुछ भी उगने ही नहीं देती।

26 HELP ME PLEASE!

काफी बरसों के बाद भी कोयल ने कूकना नहीं छोड़ा,
काफी बरसों के बाद भी शक्कर ने अपनी मिठास नहीं छोड़ी,
बरसों बाद भी इत्र ने अपनी सुगंध नहीं छोड़ी,
बरसों बाद भी मोर ने टहुँकना नहीं छोड़ा,
तो फिर बचपन में मुझमें रही हुई निर्दोषता व पवित्रता,
विस्मयभाव व समर्पणभाव सरलता व सहजता....
ये सब गुण उम्र बढ़ने के साथ गायब क्यों होते जा रहे हैं,
यह मेरी समझ में नहीं आ रहा। कोई मुझे समझाने की कृपा करेंगे?

पंचांग : जुलाई-अगस्त

तिथि दर्शिका

वीर संवत् 2550 ❋ विक्रम संवत् 2080 ❋ गुरू सुदर्शन संवत् 25

द्वितीय श्रावण शुक्ल, 2080

तिथि	वार	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
1	गुरू	17-8-23	05.51	18.59
2	शुक्र	18-8-23	05.51	18.58
3	शनि	19-8-23	05.52	18.57
4	रवि	20-8-23	05.52	18.56
5	सोम	21-8-23	05.53	18.55
6	मंगल	22-8-23	05.53	18.54
7	बुध	23-8-23	05.54	18.52
8	गुरू	24-8-23	05.54	18.51
9	शुक्र	25-8-23	05.55	18.50
10	शनि	26-8-23	05.55	18.49
11	रवि	27-8-23	05.56	18.48
12	सोम	28-8-23	05.56	18.47
13	मंगल	29-8-23	05.57	18.46
14	बुध	30-8-23	05.57	18.45
15	गुरू	31-8-23	05.58	18.44

भाद्रपद कृष्ण, 2080

तिथि	वार	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
1	......			
2	शुक्र	01-9-23	05.58	18.43
3	शनि	02-9-23	05.59	18.42
4	रवि	03-9-23	05.59	18.40
5	सोम	04-9-23	06.00	18.39
6	मंगल	05-9-23	06.00	18.38
7	बुध	06-9-23	06.01	18.37
8	गुरू	07-9-23	06.01	18.36
9	शुक्र	08-9-23	06.02	18.35
10	शनि	09-9-23	06.02	18.33
11	रवि	10-9-23	06.03	18.32
12	सोम	11-9-23	06.03	18.31
13	मंगल	12-9-23	06.04	18.30
14	बुध	13-9-23	06.04	18.29
30	गुरू	14-9-23	06.05	18.27
30	शुक्र	15-9-23	06.05	18.26

विशेष ध्यातव्य

❋ सूर्योदय और सूर्यास्त का समय नई दिल्ली के अनुसार है।

❋ 15 अगस्त, 30 अगस्त और 14 सितम्बर, 2023 को पक्खी पर्व है। प्रतिक्रमण करने का भाव रखें। पौषध करें।

❋ 17 अगस्त सिंह की संक्रान्ति है और 17 सितम्बर, 2023 को कन्या की संक्रान्ति है। गुरू मुख से सुनने का भाव रखें।

दर्शन, प्रवचन के लिए उपस्थित हुआ महिला संघ

श्री वर्धमान जैन महिला संघ रोहिणी से. 3, महामंत्री जैन कांफ्रेंस की राष्ट्रीय महिला उपाध्यक्ष श्रीमती संतोष जैन, संघ की प्रधान श्रीमती कुसुम जैन, उपप्रधान श्रीमती विनय जी जैन अनेक बहनों के साथ 13 तारीख वीरवार को आगमज्ञाता योगीराज श्री अरुणचंद्र जी म. के दर्शन एवं प्रवचन के लिए पीतमपुरा उत्तरी के जैन स्थानक में पहुँची। सभी बहनें महिला संघ की ड्रेस में थीं। गुरुदेव ने वर्धमान महिला संघ की सभी बहनों की तथा महामंत्री संतोष जैन की प्रवचन में प्रशंसा की और आशीर्वाद दिया कि सामाजिक एवं धार्मिक सेवा के कार्य में निरंतर प्रगति करती रहें।

प्रवचन के पश्चात् महिला संघ की महामंत्री ने पीतमपुरा संघ को बधाई दी कि उनको ऐसे महान गुरुओं के महान शिष्यों का और महासाध्वी श्री सुषमा जी एवं संगीत जी का चातुर्मास मिला। उन्होंने बताया जिस तरह गुरु महाराज, भगवन्श्री, तपस्वी जी, सेठ जी म. जिस भी क्षेत्र में पहुँचते थे, वहाँ इसी तरह का समवसरण लगता था। गुरुदेव श्री अरुणचंद्र जी म. की प्रवचन की रौनकें व प्रवचन शैली अक्षरशः गुरु महाराज से मिलती है। वास्तव में गुरुदेव की असीम कृपा गुरुदेव श्री अरुण मुनि जी म. को मिली है। आप वास्तव में एक दृढ़ संयमी संत हैं। आपके सभी संत जिनशासन के देदीप्यमान कोहिनूर हीरे हैं। उसके पश्चात् महिला संघ की बहनों, कोषाध्यक्ष अन्नु जैन, निर्मल जैन, मोना जैन, शालू जैन, अनिता जैन, पूजा जैन, ज्योति जैन ने चातुर्मास हेतु पीतमपुरा को बधाई दी तथा गुरुदेव की संयम, ज्ञान, दर्शन, चारित्र की प्रशंसा की। सलाहकार दर्शना जैन, कमला जैन, सुशीला, चंदन, ममता, उर्मिला जैन आदि सदस्या भी उपस्थित थीं।

29 आरोग्य लाभ की शुभभावना लेकर गुरुदेव सेक्टर - 7 में

राजर्षि गुरुदेव श्री राजेंद्र मुनि जी म. के सुशिष्य श्री पुनीत मुनि जी म. स्वास्थ्य कारणों से बहुश्रुत गुरुदेव के चरणों में विराज रहे हैं। ऐसे में गुरुदेव आदि ठाणे-4 स्वास्थ्य पृच्छा हेतु रोहिणी सेक्टर 7 में पधारे। गुरुदेव ने पूर्ण आत्मीयता से चर्चा की तथा आवश्यक सुझावों से कृतार्थ किया। तत्र विराजित गुरु भगवंतों ने भी उदार स्नेह से सराबोर किया। जन श्रद्धाओं-परस्पर स्नेह वृद्धि करवाने वाले ऐसे मिलन का सुंदर स्वागत किया। मुनिवर श्री पुनीत जी महाराज! आप शीघ्र ही पूर्ण रूप से स्वस्थ होकर चतुर्विध संघ में प्रसन्नता का संचार करो। रोम-रोम से और पल-पल हमारी शुभकामनाएँ आपके आरोग्य लाभ हेतु जारी हैं।

30 पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह

संघशास्ता गु. श्री सुदर्शन लाल जी म. के सुशिष्य आगमज्ञाता योगीराज पूज्य गुरुदेव श्री अरुणचंद्र जी म., युवा मनीषी पूज्य श्री मनीष मुनि जी म. आदि ठाणे-6 एवं महासाध्वी श्री सुंदरी जी म. की सुशिष्या जैन कोकिला, महासाध्वी श्री सुषमा जी म., विदुषी महासाध्वी श्री संगीत जी म. आदि ठाणे-8 का शुभ संयुक्त चातुर्मास उत्तरी पीतमपुरा में धर्माराधना की विविधताओं के साथ गतिमान है। देखते ही देखते एक माह पूर्ण होने को हैं। क्षेत्रवासी पूर्ण

महिला संघ-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-गुरुदेव सेक्टर सात में-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-प्रतिदिन होने वाले गुरुदेव के प्रवचनांश-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-महिला संघ-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-गुरुदेव सेक्टर सात में-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-प्रतिदिन होने वाले गुरुदेव के प्रवचनांश-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना

श्रद्धा के साथ धर्मलाभ प्राप्त कर रहे हैं। एक तो दिल्ली फिर ऊपर से उसी दिल्ली का सुविशाल क्षेत्र पीतमपुरा तथा उस पीतमपुरा वासियों की श्रद्धाओं पर राज करने वाले योगीराज गुरुदेव। अतः दिल्ली में यमुना ही नहीं, अपितु पीतमपुरा के प्रांगण ने भी रौनकों के रूप में बाढ़ का रूप धारण किया हुआ है। प्रातः प्रार्थना की शुरुआत से लेकर रात्रि धर्म चर्चा तक एक सुंदर माहौल बना रहता है। चतुर्विध संघ परस्पर धर्माराधना में निमित्त बना हुआ है।

गुरुदेव ने कड़े पुरुषार्थ से पीतमपुरा वासियों को एकता के सूत्र में बाँध कर रख दिया है। प्रातः प्रार्थना के पश्चात् एक कंठस्थ कक्षा आयोजित होती है, जो दिन भर ही गतिशील रहती है। इसके अंतर्गत पचासों विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं।

प्रवचन से पूर्व भी एक धर्मबोध कक्षा होती है और फिर 8.15 बजते तो पीतमपुरा वासी एक ही स्थल को केंद्र मानकर समूह के समूह उमड़कर आते हैं। एक सप्ताह श्री मनीष मुनि जी म. तथा एक सप्ताह श्री संगीत जी म. क्रमानुसार प्रभावी गर्जनाओं से देशना प्रवाहित करते हैं। तदन्तर गुरुदेव 40 मिनट तक तन्मय होकर हृदयग्राही विषयों पर सारपूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत करते हैं। प्रवचनोपरांत श्री मनीष मुनि जी म. भगवती सूत्र की कक्षा को संबोधित करते हैं। इसी कड़ी में परीक्षाओं का सुंदर कार्यक्रम भी हो रहा है। रविवार को बालकों की कलर भरो परीक्षा में 85 बच्चों ने भाग लिया तथा उत्तराध्ययन की खुली किताब परीक्षा चल रही है।

तपस्या में भी पीतमपुरा अपने आपको अव्वलता की ओर ले जा रहा है। जहाँ तेले-पौषध-आयंबिल और उत्तराध्ययन के पाठ की श्रृंखला चल रही है, वहीं 15 अठाई तथा दो व्रतों के मासखमण पूर्ण हो चुके हैं। महान् तपस्वियों के नाम हैं- श्राविका लिटल जैन (सुल्तान-रिण्ढ़ाणा) एवं तपस्वी श्री सुनील जैन (धोती वाला परिवार) जिन्होंने 37वां मासखमण पूर्ण किया है।

दिन भर दर्शनार्थी वर्ग गुरुदेव के दर्शनों से कृतकृत्य हो रहा है। गुरुदेव एवं उनका शिष्यगण स्वाध्याय से समय को खूब सार्थकता दे रहा है। चतुर्विध संघ को पूर्ण समाधि और प्रसन्नता का भाव है। पीतमपुरा संघ की प्रशंसनीय सेवाएँ आम और खास सर्वजन के लिए चर्चा का केन्द्र बनी हुई हैं।

ऐसे मनोहर माहौल के दिग्दर्शन हेतु आप अवश्य पधारें। ध्यान रखें कि गुरुदेव ठाणे-6 से उत्तरी पीतमपुरा एवं महासाध्वी वृंद ठाणे-8 से के.पी. 28 पीतमपुरा में विराजित हैं।

प्रतिदिन होने वाले गुरुदेव के प्रवचनांश

2 जुलाई - आज 108 पौषधों के साथ चौमासी पर्व की आराधना हुई। मध्याह्न में आलोचना पाठ एवं धार्मिक कक्षा आयोजित हुई। प्रवचन में गुरु म. ने फरमाया कि चातुर्मास की सफलता का एक ही पैमाना है- बस! मुक्ति की प्यास का जगना। मार्मिक विषय प्रस्तुत करते हुए कहा- पंचम आरे में तो सम्यक्त्व प्राप्त करना ही केवलज्ञान के बराबर है। प्रतीक्षा का समय अब पूरा हो गया, अब प्रतिज्ञा का समय आ गया है।

महिला संघ-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-गुरुदेव सेक्टर सात में-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-प्रतिदिन होने वाले गुरुदेव के प्रवचनांश-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-महिला संघ-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-गुरुदेव सेक्टर सात में-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-प्रतिदिन होने वाले गुरुदेव के प्रवचनांश-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना

3 जुलाई - आज गुरु म. ने 7 पैटर्न के विषय को निरंतर करते हुए 'कायर पैटर्न' विषय पर सुनाया। कहा- आज का मानव डरा-डरा जीवन जीता है। काल्पनिक डर का रोचक वर्णन करते हुए कहा- इंसान उसे सोचकर भी डरता रहता है, जो उसके जीवन में नहीं घटने वाला।

4 जुलाई - आज गुरु म. ने 'लायर पैटर्न' को लयबद्धता से सुनाते हुए कहा- आज इंसान अच्छा बनना नहीं चाहता, पर दिखना चाहता है। बस भगवान ने इसे ही माया कहा है। माया का शाब्दिक अर्थ- मा- नहीं, या- जो। जो नहीं है, उसे प्रस्तुत करना है माया।

5 जुलाई - आज 'लापरवाह पैटर्न' की बेहतरीन प्रस्तुत दी। आप यह प्रवचन पेज नं. ..... पर संपूर्ण रूप से पढ़ सकते हैं।

6 **जुलाई** - आज Balmer पैटर्न विषय की शुरुआत करते हुए कहा- एवरी सिचुएशन को स्वीकार करो। फिर दु:ख भी दु:खी नहीं कर सकेंगे। कर्मों में दु:खी करने की ताकत तभी तक है जब हम दु:खी होना चाहेंगे। 'कर्म ये तेरे रे, साथ ना छोड़ेंगे' भजन ने सभा में रस घोल दिया।

7 जुलाई - आज गुरु म. ने कम्पलीट ट्रेनिंग ऑफ लाइफ विषय पर फरमाते हुए कल वाले Balmer पैटर्न के विषय को पूर्ण किया। कहा- हम दु:खों का ठीकरा दूसरे के सिर पर ना फोड़कर अपने सिर पर ही फोड़ें। आपने इतने थोकड़े याद किए हैं। एक थोकड़ा यह भी याद कर लो कि हर कर्म का जिम्मेदार मैं हूँ। दूसरों को ना बदल कर स्वयं को बदल लो।

8 जुलाई - आज गुरु म. ने 'माइजर पैटर्न' के विषय पर फरमाया- हमें कंजूस वृत्ति पर अंकुश लगाना चाहिए। हमें अपना इतिहास भूलना नहीं चाहिए कि हम भामाशाह-झगडूशाह के वंशज हैं। गुरु म. कहते थे- दान इतना भी ना दो कि बेघर होना पड़े तथा संग्रह भी इतना मत करो कि नरकों में रहने को मिले।

शालिभद्र के प्रसंग ने सभा को मन्त्रमुग्ध किया। आज सभा में स्वास्थ्य मंत्री, सांसद श्री हर्षवर्धन जी एवं अन्य कार्यकर्ता अपनी टीम के साथ आएं। उन्होंने जैन संतों के प्रति स्वयं को श्रद्धावंत बताया.... दिन में लेफ्टिनेंट जनरल (दिल्ली) विवेक जी दर्शनार्थ उपस्थित हुए।

9 जुलाई, रविवार - महासंघ के चुनाव होने के साथ-साथ आज प्रात: वेला से ही बारिश थी। इसके बावजूद भी श्रोताओं की उपस्थिति देखते ही बन रही थी। श्री अतिमुक्त मुनि जी म. ने क्रोध के विषय पर श्रावकों ने सुंदर भजन, फिर श्री मनीष मुनि जी म. ने निरंतर चल रहा पुण्य के विषय पर क्रमश: फरमाया।

अंत में गुरु म. ने सातवें और अंतिम पैटर्न टाइम किलर पर महत्ती कृपा करते हुए फरमाया- यदि हर क्षेत्र में विकास चाहते हो, तो टाइम मैनेजमेंट का ध्यान रखो। इस बात पर जोर देकर कहा कि समय के विभाग करो। कहाँ कितना समय देना है? सारा समय कषाय-कुटिलता- क्लेश-किटी पार्टियों को ना देकर कुछ समय कल्याण के लिए

महिला संघ-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-गुरुदेव सेक्टर सात में-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-प्रतिदिन होने वाले गुरुदेव के प्रवचनांश-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-महिला संघ-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-गुरुदेव सेक्टर सात में-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-प्रतिदिन होने वाले गुरुदेव के प्रवचनांश-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना

भी निकालो।

10 जुलाई – आज, कल के विषय को पूर्ण करते हुए फरमाया– समय लौटकर नहीं आता है। एक साल की कीमत फेल हुए छात्र से, 1 माह का महत्व उस माँ से पूछो, जिसने आठ मासिया बच्चे को जन्म दिया। सप्ताह की कीमत साप्ताहिक संपादक से, 1 दिन की कीमत सम्राट सिकंदर से, एक मिनट की कीमत अभी–अभी जिसकी जरूरी ट्रेन छूट गई तथा 1 सैकेंड की कीमत मिल्खा सिंह से पूछो, जो मैडल पाते–पाते रह गया। भगवन् श्री से सुने प्रसंग के माध्यम से गुरु म. ने मधुर लहजे से समझाया कि 'जो हाथ में है, उसे सफल कर लो'।

11 जुलाई – आज गुरु म. ने ट्रेनिंग के नए विषय को प्रारंभ करते हुए नेत्र संयम पर गहरा चिन्तन प्रस्तुत किया। प्रसंग सुनाया– 24/25 वर्षीय दो सगे भाई राजकुमार गुरुकुल के 12 वर्ष को पूर्ण कर नगर लौट रहे थे। मार्ग सजा हुआ है। हजारों की जनता स्वागत के पलकें बिछाए हुए हैं। रथ में दोनों राजकुमार आ रहे हैं.... तभी उनकी नजर झरोखे में खड़ी एक नवयुवती पर पड़ी। दोनों काम राग की दृष्टि से देखने लगे।

दोनों महल में माँ के पास पहुँचे। पास में वो नवयुवती भी खड़ी थी। माँ– बेटी! चलो अपने भ्राताओं के पाँव को छुओ। इतने शब्द सुनते ही होश उड़ गए। राजकुमारों के सिर शर्म से झुक गए। लानत होने लगी स्वयं पर। बहन के प्रति कुदृष्टि! यह वही बहन थी, जिसे उन्होंने 12 वर्ष पहले देखा था। और! आजीवन शीलव्रत निभाने का दृढ़ संकल्प कर लिया।

12 जुलाई – आज फिर नेत्र–संयम के विषय को आक्रामक लहजे में प्रस्तुत किया गया। लक्ष्मण रेखा लाँघने वाले युवाओं को खूब चेताया। संघशास्ता गु. का उदाहरण देते हुए कहा– वो 8 साल चाँदनी चौक रहे। पर! कभी लाल किला ना देखा, गुजरती शोभा यात्रा ना देखी। हमेशा मर्यादा में रहे। लक्ष्मण के आभूषण वाले प्रसंग ने विषय को चार चाँद लगा दिए।

13 जुलाई – गुरु म. ने चिरपरिचित अंदाज में वाणी–संयम पर फरमाते हुए कहा– तमाम संघर्षों की जड़ वाणी का असंयम है। इंसान को कम और काम का बोलना चाहिए। तर्कपूर्ण लहजे से कहा– निशिथ सूत्र में वर्णित है कि मुनि उद्दण्डतापूर्वक भाषा बोले तो उसे गुरु चौमासी का दंड आता है....।

14 जुलाई – गुरु म. द्वारा मीठे लहजे में नसीहत दी गई कि मीठा और सरल बोलो। जहाँ विवाद की स्थिति निर्मित होती दिखे, तो मौन धारण कर लो। हास्य प्रसंग सुनाया– एक बार मैं गोचरी को गया। घर में पत्नी पति से तमतमाकर बोली– मैं कच्चे को खा जाऊँगी। 'इतना सुनकर मैं तो डर गया' वापस हो लिया, क्योंकि कच्चा तो मैं भी था।

15 जुलाई – आज गुरु म. ने लक्ष्य निर्धारित करने पर जोर दिया। भौतिकता के लक्ष्य पर करारा प्रहार करते हुए कहा– इस जन्म में कभी तो संयम और सत्य को पाने का प्रयास करो। चूहे और इंग्लैंड गई हुई बिल्ली के उदाहरण

महिला संघ-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-गुरुदेव सेक्टर सात में-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-प्रतिदिन होने वाले गुरुदेव के प्रवचनांश-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-महिला संघ-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-गुरुदेव सेक्टर सात में-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-महिला संघ-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-प्रतिदिन होने वाले गुरुदेव के प्रवचनांश-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना

से अपनी बात को प्रबलता दी। आज दिगंबर समाज प्रवचन श्रवणार्थ उपस्थित हुआ।

16 जुलाई – आज रविवार और संक्रांति पर्व होने के कारण अहमदगढ़, जालंधर, जैत्तो, हनुमानगढ़, लुधियाना, पंचकुला, गन्नौर आदि उत्तरी भारत के कोने-कोने से एवं दिल्ली के विभिन्न उपनगरों से श्रोता उमड़ कर आए, जिसे स्थानीय श्रावकों ने एक हजार की संख्या से ऊपर आँका।

आज पहली बार गुरु म. की सभा में जीजा-साला दिवस मनाया गया। गुरु म. ने 'आदर्श रसोई' के विषय पर विस्तार देते हुए चिंता व्यक्त की कि देखना! कहीं विदेशों की तरह हमारे घर भी रसोई मुक्त ना हो जाएं। गुरु म. उपस्थित श्रोताओं को भावनात्मक स्तर पर त्रिशला की रसोई में लेकर गए। इससे पहले महासाध्वी श्री संगीत जी म. ने धाराप्रवाह प्रवचन प्रस्तुत किया। भजन गायकों में रानी बाग की हरियाणवी जोड़ी और रूपक / दीपक ने खूब समां बाँधा।

17 जुलाई – गुरु म. ने श्रोताओं से सवाल किया कि आपकी जिंदगी का लक्ष्य क्या है? इंसान कोल्हू के बैल की तरह घूम-फिर कर फिर वहीं आ रहा है। यदि समझ-साहस-संकल्प-सामर्थ्य-समय है तो लक्ष्य जरूर पूर्ण होगा। बस एक बार रोग मुक्त-शोक मुक्त-भोग मुक्त होने का लक्ष्य तो बनाकर देखो।

18 जुलाई – आज भगवन् श्री के 16वें पुण्य तिथि वर्ष पर सभा को भिगोते हुए फरमाया- वो इस धरा के विद्वान, विनम्र और वरदान पुरुष थे। उनका जीवन रामायण की तरह सदैव पठनीय रहेगा। इसके साथ ही उनके जीवन की अथ से इति, उनके जीवन की मुख्य घटनाओं की रोचकता से पेश किया।

19 जुलाई – आज 'लक्ष्य' के अधूरे विषय को पूर्णता का रूप देते हुए कहा कि बिना लक्ष्य का इंसान और बिना पते का पत्र कहीं नहीं पहुँच पाता। कहा- चातुर्मास को खाली बेले-तेले और दर्शन-प्रवचन से सफल मत समझना। अपने किसी एक आंतरिक अवगुण को अलविदा करने का लक्ष्य बनाना।

20 जुलाई – आज सभा को गुरु म. द्वारा विचारों की ट्रेनिंग दी गई। फरमाया- मन में दूषित विचार की लहर उठते ही उसकी दिशा बदल दीजिए, वरना आत्मा की दिव्यता और पवित्रता खंडित हो जाएगी।

21 जुलाई – गुरु म. ने सकारात्मक और नकारात्मक विचारों पर प्रकाश डालते हुए कृपा की कि विचारों के कारण ही हम सुखी और दु:खी होते हैं। विपरीत परिस्थिति में विचारों को नकारात्मक मत होने दो अन्यथा मुसीबत कई गुणा ज्यादा प्रभावी होगी। अनुकूलताओं के उजालों में तो काँच भी चमकते रहते हैं पर आप हीरा बनकर प्रतिकूलताओं के अंधेरों में भी अपनी चमक का अहसास करवाइये। 'मोती कुत्ते' की कहानी सुनकर खूब आनंद आया।

22 जुलाई – आज गुरु म. द्वारा 18 पापों के विषय की शुरुआत की गई। बहुत ही मार्मिक बातें सभा ने सुनी। फरमाया- पाप करने में बहुत टेस्टी और परिणाम में अति भयंकर है। धर्म करने में एक बार बोरिंग हो सकता है। लेकिन परिणाम में समधुर है। पते की बात कही- यदि रूटीन के पाप कम नहीं कर सकते हो, तो पापों में रुचि कम

महिला संघ-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-गुरुदेव सेक्टर सात में-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-प्रतिदिन होने वाले गुरुदेव के प्रवचनांश-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-महिला संघ-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-गुरुदेव सेक्टर सात में-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-प्रतिदिन होने वाले गुरुदेव के प्रवचनांश-सूचना एवं समाचार-प्रकोष्ठ-7-पीतमपुरा चातुर्मास का प्रथम माह-सूचना

कर दो।

23 जुलाई – चातुर्मास के चौथे रविवार की आराधना 50 पचरंगी और भातृ मिलन दिवस के रूप में हुई। अनुमानत: 1200 श्रोताओं ने उपस्थिति दर्ज करवाई, जिसमें चंडीगढ़, रायकोट, लुधियाना, गुड़गाँव, नरवाणा से व्यक्तिगत गुरुभक्त तथा रोहतक एवं सफीदों क्षेत्र से दर्शनार्थी वर्ग बस वाहन के साथ उपस्थित हुआ। प्रारंभ में महासाध्वी श्री संगीत जी म. ने सामायिक की महत्ता पर सुंदर विवेचन किया। फिर श्री मनीष मुनि जी म. ने वक्तव्य प्रारंभ करते हुए कहा– आज इस पीतमपुरा के प्रांगण में हंसों (सामायिक) की पंक्ति ही पंक्ति नजर आ रही है।

अंत में गुरु म. ने भातृ दिवस को सार्थक करते हुए सुनाया– परिवार एक पुस्तक है, जिसकी बाइंडिंग प्रेम के धागे के साथ करनी चाहिए। इससे मन में द्वेष की उपज नहीं होगी। अकेले स्थानकों के धर्म से कल्याण नहीं होने वाला। वो दृश्य कमाल का था, जब प्रवचन सभा में ही भाई–भाई के साथ गले लगे।

24 जुलाई – आज गुरु म. ने प्राणातिपात पर गहरा चिंतन प्रस्तुत करते हुए कहा कि श्रावक स्थानक में तो कीड़ी–हिंसा को भी महापाप का बंधन मानते हैं पर बाहर नाजायज हिंसा का भी समर्थन करते हैं। दुराग्राहियों को साफ कहा कि संत तो आपको चौथे आरे के चाहिए और आप खुद छठे आरे का जीवन जीते रहो। ऐसा नहीं हो सकता।

आगे कहा–बहुत जगह ऐसी है, जहाँ पर हम पाप से बच तो सकते हैं, पर बचते नहीं हैं।

आखिर क्यों?

आखिर क्यों?

आखिर क्यों?

Rajesh Jain Sonu Jain
9878559911

Sambhav Enterprises

Deals In :
Shuttering & Scaffolding Material
On Hire Basis

Plot No.-150, Hansa Industrial Park,
Barwala Road, Derabassi,
Distt. Mohali (Punjab)

Sachin Jain

Nitin Jain

Kapil Jain

Funkee Star

Premium Wear
Kids Party Wear Colletion
Baba Suit, Indo Western, Sherwani
Kurta Pajama, Coat-Pant

Mfg. By

Sudharma Garment LLP

Shop : X/1297, Bhature Wali Gali, Gandhi Nagar, Delhi-110031
Head Office : Plot No. B-30, Sector-A-1, Tronica City Industrial Area, Gaziabad (UP)
Branch Office : X/3489-90, Street No.-4, Raghubar Pura No.-2, Ghandhi Nagar, Delhi-110031
Ph : 9354776177, 9810393816, 9212229381, 9250655206

श्री सुदर्शन गुरवे नमः ।। श्री महावीराय नमः ।। श्री अरुण गुरवे नमः

झड़ोदाकलां परिवार द्वारा

पूज्य गुरुदेव

श्री अरूण मुनि जी म. के पावन चरणों में

कोटिशः वन्दन नमन

M/S M.P. DALL MILL

MANUFACTURERS of PULSES

Office : 3959/1, Naya Bazar, Delhi-110006

Mfg. Unit :

M-27, Sector-1, DSIDC Industriel Area, Bawana, Delhi-39

E-47, Sector-2, DSIDC Industriel Area, Bawana, Delhi-39

सुरेन्द्र जैन
9810589013

दीपक जैन
9810200481

Vikash jain
9213125553

Deepak jain
9899165164

GSP®
INFINITE FASHION

JAIN UDAY TEXTILES

Mfd. By

Legging, Plazo, Pant, Petticoat, Kurti

IX/1208 B, Near Gali No. 0, Multani Mohalla, Subhash Road, Gandhi Nagar, Delhi-31

!! श्री रोशन गुरवे नमः !! !! श्री महावीराय नमः !! !! श्री धर्म गुरवे नमः !!

Fair Choice
Shirts

NGR Shirts

NAVKAR FASHION

IX/6728, JANTA GALI, GANDHI NAGAR, DELHI-31

Sandeep jain
8800171017

Pankaj jain
8527526336

!!श्री सुदर्शन गुरवे नमः!! !!श्री महावीराय नमः!! !!श्री अरुणचन्द्र गुरवे नमः!!

Prithviraj Jain
9464800648

Rattanlal Jain
9417100046

Sanjeev Jain
9876239933

Sanket Jain
9517999000

Jain Agro Industries

Rice Processors & Exporters

Specialist In Basmati Rice

Contact : 9876239933 I jainagro77@gmail.com
Sultanpur Road, Kapurthala-144601 (Punjab)

Narinder jain
80543-00035

Arihant Textiles

111, New Cloth Market
the Mall Bathinda-Punjab
Mob : +91-80543-00035

Rajeev jain

Vardhman Handloom

Naya Bazar, Sunam, Punjab
Mob : +91-9803026100

Suresh Jain
9311684496

Arihant Jain
9313208594

Sachin Jain
9971954325

PARAS ESTATE

Builder Collaborator & Financial Advisor

B-6/86, Sector-7, Shiva Road, Rohini, Delhi-110085
Branch Office : A-1/358, Sector - 36, Rohini, Delhi

Krishan Jain

Punit Jain

Akhil Jain

मै. मांगेराम कृष्ण कुमार जैन

कमीशन एजेन्ट

दुकान नं. ३०, नई अनाज मण्डी, गन्नौर, जिला सोनीपत

Shreyans Automotives

Saharanpur Road, Mohabbewala, Dehra Dun (Uttarakhand)
E-mail : shrayansauto@gmail.com

!!श्री सुदर्शन गुरवे नमः!! !!श्री महावीराय नमः!! !!श्री अरुणचन्द्र गुरवे नमः!!

श्री नवकार ग्रुप

द्वारा

पूज्य गुरुदेवों के चरणों मे

आदर कोटिश: वन्दन नमन

गुरुभक्त राजकुमार जैन
(अहीरमाजरा)
9211395367

गुरुभक्त सतीश जैन
(हथवाला)
8377819409

NavkarCreation

Deals In: Fancy Shirts & Jeans
IX/6522-A Nehru Gali, Gandhi Nagar, Delhi-31

NAVKAR STEEL TUBE

Mfrs. Of: All Kinds Of Stainless Steel Pipe
A-115, 1st Floor, Wazirpur Industrial Area, Delhi-52

NAVKAR INDUSTRIES

Mfrs & Suppliers Of : S.S Wire & Rod

NAVKAR WIRE INDUSTRIES

Mfrs & Suppliers Of : Iron Wire
KH. NO. 26/17 and 24, Gali No. 22, Libaspur, Delhi-42
E-mail :navkarindustries2015@gmail.com

!!श्री महावीराय नमः!!

!!श्री सुदर्शन गुरवे नमः!! !!श्री अरुणचन्द्र गुरवे नमः!!

NVR® PRODUCT

Make it's own way.....

जीओ और जीने दो

RAJESH JAIN

(लोहे वाले)

NAVNEET JAIN
9814644141

98140-61899

VINEET JAIN
9876561899

N.V.R. FORGINGS

AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY

Mfrs. of HAND TOOLS

10, Waryana Industrial Complex,
Leather Complex Road, Jalandhar

Ph : 91-181-2650958, 98761-57400 Fax : 91-181-2650873

e-mail : nvrforgings10@yahoo.in I web : nvrforgings.com

N.V.R. OVERSEAS

45-A, Kapurthala Road, Near Patel Chowk, Jalandhar City
Ph : 2621066, 2621067 E-mail : nvroverseas@rediffmail.com

!! श्री महावीराय नमः !!

!! गुरु मया-मदन-सुदर्शन संघ की जय !!

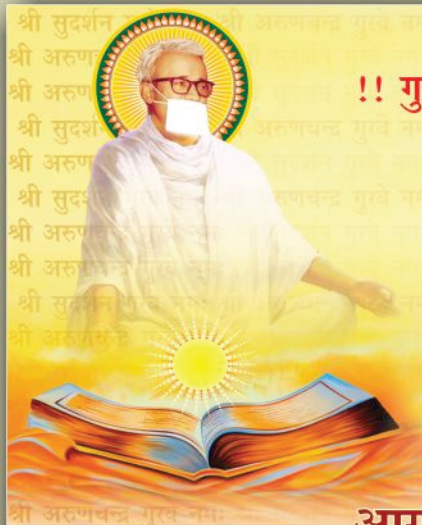

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में

ज्ञान की गंगा बहा रहे

संघशास्ता शासन प्रभावक परम श्रद्धेय

पूज्य गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. सा.

के सुशिष्य

आगमज्ञाता युवाप्रेरक महाप्रभावी

पूज्य गुरुदेव श्री अरूणचन्द्र जी म. सा.

के चरण कमलों में

सादर कॉटिशः वन्दन नमन

पावन ज्ञान गंगा में डुबकी लगाकर
चरम लक्ष्य की ओर सार्थक कदम बढ़ाऐं

एक बार प्रवचन अवश्य सुनें

Lemon TREE

5/19, Basement, W.E.A., Saraswati Marg,
Karol Bagh, Delhi-110005

अशोक जैन जाजवान

9810520815

सम्भव जैन - अंशुल जैन

रत्नत्रय प्रकाशन, दिल्ली

मंगल पाठ

मंगल वाणी

श्रावक प्रतिक्रमण

थवथुइमंगल

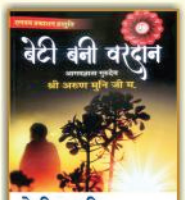

बेटी बनी वरदान

आलोचना पाठ

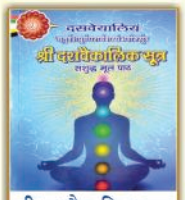

श्री दशवैकालिक सूत्र

संक्षिप्त परिचय

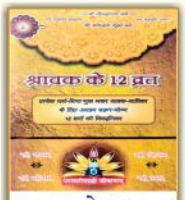

श्रावक के 12 व्रत

श्री सुखविपाक सूत्र

सरस्वती

अर्ज मेरी सुन लो...

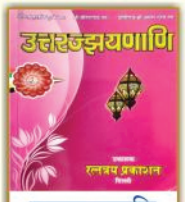

उत्तरज्झयणाणि

मौलिक कहानियां

श्री उत्तराध्ययन सूत्र

अंतकृत दशांग सूत्र

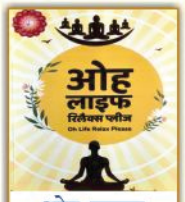

ओह लाइफ

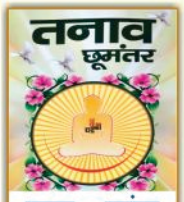

तनाव - छूमंतर

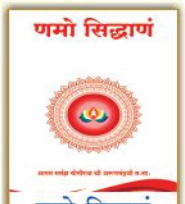

णमो सिद्धाणं

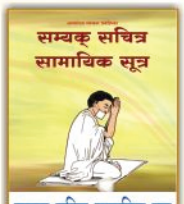

सम्यक् सचित्र सामायिक सूत्र

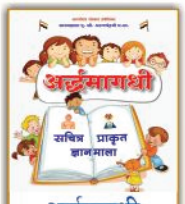

अर्द्धमागधी

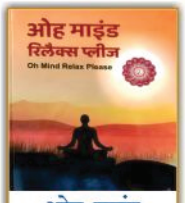

ओह माइंड

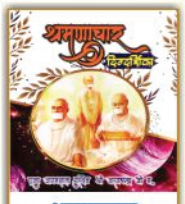

श्रमणाचार

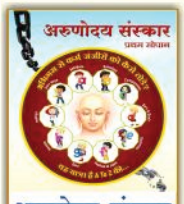

अरुणोदय संस्कार

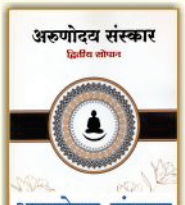

अरुणोदय संस्कार

रत्नत्रय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
साहित्य प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें

दिनेश जैन - 9953597013, हर्षित जैन - 9911177434

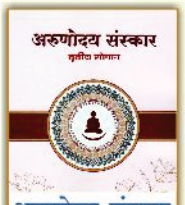

अरुणोदय संस्कार

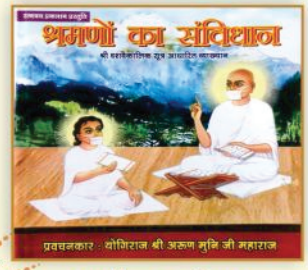

श्रमणों का सविधान

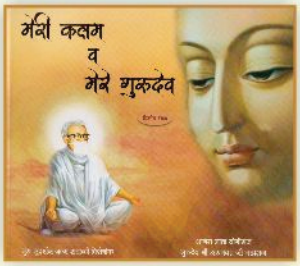

मेरी कलम व मेरे गुरुदेव
भाग-1 व 2

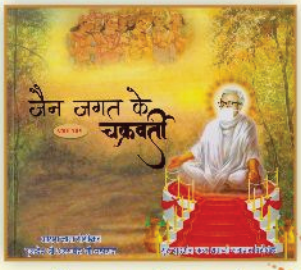

जैन जगत के चक्रवती

RNI No. DELBIL/2017/71825 DL No. DL(N)/365/2023-25 POSTING DATE 10-11

!! श्री सुदर्शन गुरवे नमः !!

आगमज्ञाता पूज्य गुरुदेव श्री अरुणचन्द्र जी म. सा.

पूज्य श्री मनीष मुनि जी म., पूज्य श्री अमन मुनि जी म.,
पूज्य श्री अतिमुक्त मुनि जी म., पूज्य श्री अनुराग मुनि जी म.,
पूज्य श्री अभिषेक मुनि जी म., पूज्य श्री अभिनन्दन मुनि जी म.,
पूज्य श्री अरविन्द मुनि जी म. के

पावन चरणों में सादर कोटिशः वन्दन नमन

राष्ट्रीय कार्यकारिणी 2023 - गुरु सेवक परिवार

संरक्षक

श्री मुकेश जैन
दिल्ली

चेयरमैन

श्री विनोद जैन
लुधियाना

प्रधान

श्री मदललाल जैन
पीतमपुरा, दिल्ली

महामंत्री

श्री दिनेश जैन'गन्नौर'
दिल्ली

कोषाध्यक्ष

श्री प्रवीण जैन
रोहिणी, दिल्ली

मार्गदर्शक

श्री आशीष जैन
बड़ौत

उपप्रधान

श्री नीरज जैन
ग्रीन पार्क, दिल्ली

उपप्रधान

श्री सुशील जैन
गाजियाबाद

उपप्रधान

श्री अंशु जैन
सूर्यानगर, दिल्ली

सहमंत्री

श्री गिरीश जैन
दिल्ली

सहमंत्री

श्री पंकज जैन
अरिहंत नगर, दिल्ली

सहकोषाध्यक्ष

श्री महावीर प्रसाद जैन
पानीपत

मीडिया प्रभारी

श्री पुनीत जैन
गन्नौर

सलाहकार

श्री पवन जैन
बलवीर नगर, दिल्ली

स्वामी-मुद्रक एवं प्रकाशक दिनेश जैन द्वारा पारस ऑफसेट प्रा. लि. कुण्डली इंडस्ट्रियल एरीआ, कुण्डली (हरियाणा) से मुद्रित एवं
424, चौथी मंजिल, डी-मॉल, ट्विन डिस्ट्रिक सैक्टर-10, रोहिणी, दिल्ली-110085 से प्रकाशित।